चेतना के स्वर

संकलन एवं संपादन
प्रभा ठाकुर

पंचशील प्रकाशन
जयपुर-302003

भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1985 में अपने त्याग और बलिदान भरे, यशस्वी, फलदायी तथा सदा के लिए स्मरणीय सौ वर्ष पूरे किये थे। इस वर्ष को इसलिए शताब्दी समारोह वर्ष के रूप मे सारे देश में मनाया गया। राजस्थान में भी समुचित आयोजन हुए। इनमें 'राष्ट्रीय एकता कवि सम्मेलन' की श्रृंखला का विशेष महत्त्व हो गया, और सारे देश में माना गया कि यह शताब्दी वर्ष मे निराला, गुणकारी और प्रभावी कार्यक्रम रहा। इस प्रकार की प्रशंसा जो प्राप्त हुई, वही आयोजकों के लिए संतोषकारी पुरस्कार है।

कांग्रेस और राष्ट्रीय एकता का विशेष संबंध है। कहा यों जा सकता है कि दोनों एक दूसरे के पर्याय हैं। सभी जानते हैं कि अंग्रेजों ने 'फूट डालो, और राज करो' की नीति अपना रखी थी। इसका उत्तर देश के समस्त वर्गों की दृढ़ एकता से ही दिया जा सकता था। कांग्रेस का जन्म ही इस आधार के साथ हुआ, और उसने जो कुछ देश की स्वतंत्रता तथा देशवासियो की हित-साधना के लिए किया, उसका माध्यम और उपाय मूलतः राष्ट्रीय एकता ही थी, और कांग्रेस के प्रयत्न से निरन्तर राष्ट्रीय एकता और शक्ति इतनी मजबूत होती गई कि अंततः इसके आगे अंग्रेजो की फूट डालने की नीति निष्फल हुई, और अंग्रेज सरकार को भारत छोड़ने का निश्चय करना पड़ा।

इस अवसर पर महात्मा गाधी का स्मरण आवश्यक है। उन्होने देश को एकता की वाणी और शक्ति दी, और वे देश की एकता के प्रतीक हो गये। उनके साथ देश के हर भाग की श्रेष्ठतम प्रतिभा आ जुड़ी, और सामान्य भारतीयों ने भी अपूर्व और अंग्रेजों की आततायी शक्ति के दांत खट्टे कर देने वाले बलिदान किये। जो कुछ देश में स्वतंत्रता संग्राम के लिए हुआ, उसमे प्रेरणा महात्मा गांधी की थी, नेतृत्व अनेकानेक नेताओं का था, परन्तु सबसे ज्यादा कारगर हुई राष्ट्रीय एकता की ताकत।

इस ताकत की जरूरत स्वतंत्रता के बाद कम नही हुई है। इसकी जितनी उपेक्षा हुई है, उतनी ही हमारी समस्याएं बढ़ी और उलझी हैं। एक बार समस्त देशवासियों को पुनः स्वतंत्रता संग्राम के दिनों की एकता का संकल्प लेना होगा, और सदा के लिए इसे अपने जीवन का अकाट्य अंग बनाना होगा। जो कवि

सम्मेलन राजस्थान में कांग्रेस शताब्दी समारोह के वर्ष में आयोजित हुए, उनसे प्रमाणित हुआ है कि राष्ट्रीय एकता को जागृत और प्रतिष्ठित करने में देश भक्त कवियों की वाणी बहुत प्रभावशाली हो सकती है। मैं समझता हूँ कि इस शिक्षा को देश के समर्थ कवि निरन्तर अपने लिए मार्ग-दर्शक प्रेरणा मानेंगे।

जो इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, उससे अपने को जोड़कर, राजस्थान के कांग्रेस शताब्दी समारोह ने अपने को बहुत सार्थक कर लिया। इसका श्रेय हर तरह से उन आदरणीय कवियों को है जिन्होंने हमारे आमन्त्रण का आदर किया। एक सफल प्रयोग को प्राण उनकी सेवाभावी चेष्टा से प्राप्त हुआ, क्योंकि मुझे मालूम है कि कई कवि कहीं अधिक आर्थिक लाभ के अवसर छोड़कर इन सम्मेलनों में हमारे साथ हुए थे। एक राष्ट्रीय आयोजन में इस प्रकार का विचार नहीं होना चाहिए, फिर भी यह प्रयत्न त्याग का एक माध्यम बन गया, इसलिए सभी कवि विशेष कृतज्ञता के अधिकारी हैं।

सब का इस तरह साथ हो जाना भी एकता का उदाहरण हो गया था। इसके प्रबंध का दायित्व श्रीमती प्रभा ठाकुर ने उठाया। थोड़े से समय में राजस्थान के सभी सत्ताईस जिला मुख्यालयों में देश के कोने-कोने से आमन्त्रित कवियों का यथा-निर्धारित तिथियों को पहुँचना, उनके निजी सपर्क तथा सद्व्यवहार के बिना संभव नहीं हो सकता था। साथ-साथ यह बात है कि वे स्वयं प्रतिभा बान कवियत्री हैं, और हर एक कवि सम्मेलन का वे विशेष गौरव बन गई थी। उन्होंने बहुत निजी क्षति उठाकर यह आयोजन किया। मैं उनका विशेष कृतज्ञ हूँ।

शताब्दी वर्ष के साथ ऐसे आयोजनों का अंत नहीं हो जाना चाहिये। शताब्दी वर्ष का यह आयोजन अच्छा उदाहरण बन गया है। राजस्थान मे, और देश के दूसरे भागों मे, इस प्रकार के सगठित कवि सम्मेलन आयोजन बार-बार होते रहने चाहिये। एकता भीतर से फूटती है, लेकिन कवि-वाणी उसे स्फुरण प्रदान कर सकती है। यह उद्देश्य कवियों के सहयोग से प्राण-प्रदाता बनाया जा सकता है।

मैं जयपुर के पंचशील प्रकाशन तथा उसके विचारवान संचालक श्री मूलचंद गुप्ता का कृतज्ञ हूँ। उन्होंने सुरुचि से इस सकलन का प्रकाशन किया है। जहां-जहाँ यह पुस्तक पहुँचेगी, वहाँ राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

1 सितम्बर 1986

हरिदेव जोशी
संयोजक,
कांग्रेस शताब्दी समारोह
समिति, राजस्थान, और
मुख्य मंत्री, राजस्थान।

आत्म-निवेदन

कवि को युग प्रहरी कहा गया है, युग-वाणी उसकी कलम से बोलती है। प्रस्तुत संकलन में संकलित हैं जन चेतना से जुड़ी ऐसी ही रचनाएँ जो भारत एव राजस्थान के प्रतिनिधि कवियों एवं शायरों की कलम से निःसृत हुई हैं। इस बहु-मूल्य संकलन का श्रेय जाता है 'राजस्थान कांग्रेस शताब्दी समारोह समिति' को।

सन् 1985 का वर्ष कांग्रेस के स्वर्णिम सौ वर्ष की पूर्णता का ऐतिहासिक वर्ष है। पूरे देश में कांग्रेस शताब्दी समारोह विभिन्न आयोजनों के माध्यम से पूर्व की तरह मनाया गया। राजस्थान मे भी विभिन्न कार्यक्रम प्रदेश भर में आयोजित किए गए, किन्तु इस शताब्दी वर्ष में पूरे राजस्थान में आयोजित काव्य अनुष्ठान अपने आप में एक विशेष उपलब्धि कही जाएगी।

प्रदेश के समस्त सत्ताईस जिलों के मुख्यालय पर 'राष्ट्रीय एकता कवि सम्मेलन एवं मुशायरे' की संरचना एक महत्वपूर्ण प्रयोग कहा जायेगा, जो हर दृष्टि से सार्थक और सफल रहा। इन तमाम आयोजनों मे देश एवं प्रदेश के ख्याति प्राप्त करीब सौ से अधिक रचनाकारों ने काव्य पाठ किया। हर स्थान पर हजारों श्रोताओं ने इन रचनाओं का आस्वादन किया। सभी सत्ताईस कवि सम्मेलनों को पाँच लाख से अधिक श्रोताओं ने रात-रात भर बैठकर सुना। एक अभूतपूर्व काव्य-यज्ञ। हर जगह देश एवं प्रदेश के हिन्दी, उर्दू एवं राजस्थानी के प्रमुख कवियों की राष्ट्रीय एकता की जमीन को सींचती प्रभावशाली काव्य-वाणी, शृंखला बद्ध, सुनियोजित आयोजन, आम कवि-सम्मेलनो से अलग गौरव गरिमा-युक्त। लोग बधाई देते हैं मुझे। वस्तुतः बधाई के पात्र हैं कांग्रेस शताब्दी समारोह समिति राजस्थान के अध्यक्ष एवं राजस्थान के माननीय मुख्य मंत्री श्री हरिदेव जी जोशी जिनकी प्रेरणा इन आयोजनो के मूल में रही। बधाई के पात्र हैं सभी स्वनामधन्य कविगण एवं श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट, जिन्होंने आयोजनों को अपना उदार सहयोग दिया और बधाई के पात्र हैं इन आयोजनो के विशेष सहयोगी श्री बी० डी० कल्ला, हर जिले के कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता, अधिकारी-

गण तथा संयोजकगण जिनके सम्मिलित प्रयासों से इन कवि सम्मेलनों का सफल संयोजन सम्भव हो सका। देश एवं प्रदेश के अनेक प्रमुख गणमान्य नेतागण जो इन आयोजनों मे शरीक हो सके, उनकी प्रतिक्रिया रही कि ऐसे सार्थक आयोजन पूरे देश मे किये जाने चाहिए। राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना एवं सद्भावना का वातावरण सहज ही निर्मित करने में इनके द्वारा एक स्थायी व्यापक प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। मैंने स्वयं भी आयोजनों के दौरान ऐसा ही महसूस किया।

इस काव्य-यज्ञ को जिन प्रमुख कवियों, शायरों की वाणी ने पूर्णता प्रदान की उन्ही की जागरूक वाणी का दस्तावेज है यह काव्य-संग्रह। इस संकलन के लिए प्रदेश मे आयोजित कवि सम्मेलनों मे भाग लेने वाले कवियों द्वारा पढी गई रचनाओं में से विशेषत: उन रचनाओं का चयन किया गया है जो जन चेतना, राष्ट्रीय एकता एवं देश प्रेम की भावना से जुडी हुई हैं, जिन रचनाओं का पाठ इन आयोजनो का मूल उद्देश्य रहा। इस संकलन में जहाँ देश के प्रतिनिधि कवियों एव शायरों की कविताएँ हैं, वहीं प्रदेश के प्रमुख एवं नवोदित कवियों की सार्थक एवं भावपूर्ण रचनाएँ भी हैं, साथ ही प्रदेश की आंचलिक भाषा राजस्थानी के विशिष्ट कवियों की विशिष्ट रचनाओं का भी समावेश है।

राष्ट्रीय एकता और मानवीय अनुभूतियों से जुड़ी, चुनी हुई रचनाओं का यह विशेष काव्य-संग्रह पाठकों को भी उतना ही ग्राह्य एवं प्रेरक लगेगा, जिसकी सुखद अनुभूति को लक्ष-लक्ष श्रोताओं ने महसूस किया, ऐसा विश्वास है।

प्लाट : ए/बी,
सूरज नगर (पश्चिम),
गंगा पथ, सिविल लाइंस,
जयपुर (राजस्थान)।

निवेदिका
प्रभा ठाकुर

अनुक्रमणिका

भारत भूमि में जीवित है जब तक वेदों की वाणी
अमृत समझा जायेगा जब तक गंगा का पानी
जिस दिन तक कन्याकुमारी के सागर चरण पखारे
नील गगन में स्वयं प्रकाशित जब तक चाँद-सितारे
सूरज जब तक पूर्व दिशा में नई सुबह लायेगा
तब तक अपना अमर तिरंगा लहराता जायेगा

महात्मा गाँधी और नेहरू का प्यार मिला भारत को
मौलाना आजाद का भी आधार मिला भारत को
इस मशाल को संजय ने अपने हाथों से थामा
सुखदेव, भगतसिंह, बिस्मिल ने भी इसको अपना माना
अनगिन अमर शहीदों की मकरन्द बसी है इसमें
इन्दिरा जी के आदर्शों की गंध बसी है इसमें
प्रियदर्शिनी आदर्शों का अभिनन्दन करते हैं
स्वतंत्रता सेनानियों को शत्-शत् वन्दन करते हैं

याद करो वो वक्त कि जब श्वासों पर भी पहरा था
ज़ख्म गुलामी का भारत की छाती पर गहरा था
दमन चक्र अंग्रेजों के जब सरे आम होते थे
उनके हाथों हम अपनी इज्जत-अस्मत खोते थे
निर्दोषों को बीच सड़क पर संहारा जाता था
जो भी बोले बेचारा बिन मौत मारा जाता था
उस वक्त भारतीय कांग्रेस ने गोरों को ललकारा
सत्य अहिंसा और धर्म से जीत लिया रण सारा
जिनकी बदौलत हम यहाँ स्वच्छंद विचरण करते है
उन स्वतंत्रता सेनानियों को शत्-शत् वन्दन करते है

भारत वर्ष में अकस्मात इक अजब ज़लजला आया
जिसको इस माटी का कण-कण अब तक भुला न पाया

चंद हमारे अपनों को ही खुशी नहीं भायी थी
प्रजातन्त्र की ये फुलवारी रास नहीं आयी थी
विघटनकारी तत्व दिलों में दुखड़े भर सकते थे
देशद्रोही गद्दार देश के टुकड़े कर सकते थे
इन्दिरा जी ने लेकिन तब हिम्मत से काम लिया था
खुद की बलि चढ़ाकर भी ये भारत बचा लिया था
दुर्गेश नन्दिनी को अपनी श्रद्धा अर्पण करते हैं
स्वतंत्रता सेनानियों को शत्-शत् वन्दन करते हैं

सोचा था उन लोगों ने ये मधुवन झर जायेगा
प्रियदर्शिनी के संग ही ये देश बिखर जायेगा
उन्होंने सोचा था कि भारत का वजूद मिट जाये
लाल किले पर परचम कोई परदेसी फहराये
उन्होंने इस वसुधा को नफरत से दहकानी चाही
जंजीर गुलामी की हमको फिर से पहिनानी चाही
पर नही पता था उनको ये कारवाँ नही बिछुड़ेगा
एक फूल मुरझाने से ये चमन नहीं उजड़ेगा
चला गया वो फूल मगर हम सब स्मरण करते हैं
स्वतंत्रता सेनानियों को शत-शत वन्दन करते हैं !!

एक मुक्तक

शंख मंदिर में बजे चाहे कही अजान हो
इनकी आवाजों में शामिल बस यही फरमान हो
जो वतन की शान में गुस्ताखियां पैदा करे
उसका सिर धड़ से हटाना ही धर्म ईमान हो

—अब्दुल गफ्फार

शीश भले कट जाये हिन्दुस्तान नही बँटने देंगे

महाराजा रणजीतसिंह ने जिसको मान दिया था
पंज पियारों ने जिसकी खातिर बलिदान दिया था
किरपाण गुरु गोबिन्दसिंह की जिसके लिये लड़ी थी
शक्ति विदेशी जिसके सम्मुख बाँधे हाथ खड़ी थी
दहशत बैठ गई थी जिनसे शाही तलवारों में
जिन्दे बेटे चिने गये थे जिनके दीवारों में
तुमने उन्हीं सिक्ख शहीदों को उचाटना चाहा
राष्ट्र विरोधी नारों से ये मुल्क बाँटना चाहा
पर कसम भवानी की हम माँ का दूध नही लजने देंगे
शीश भले कट जाये हिन्दुस्तान नहीं बँटने देंगे

बैठ विदेशी धरती पर विष-वर्षा मत बरसाओ
अगर खैरियत चाहते हो रुक जाओ, बाज आ जाओ
भगतसिंह के हत्यारों के घर डेरा डाला है
अरे नीच, तूने तो माँ का दूध लजा डाला है
जो घर में आग लगा दे तू ऐसा चिराग लगता है
सिक्ख शब्द के माथे पर बदनुमा दाग़ लगता है
'बोले सो निहाल—सत् श्री अकाल' अपना भी नारा है
पर नारे से ज्यादा हम को मादरे वतन प्यारा है
शीश गंज गुरुद्वारा जिस दिन शपथ उठा जायेगा
उस दिन तेरी धड पर तेरा शीश नही रह पायेगा
जब तक ज़िन्दा हैं हम नक्शा नही सिमटने देंगे
शीश भले कट जाये हिन्दुस्तान नहीं बँटने देंगे।

—अब्दुल गफ्फार

दुनियां की पहली पहचान,
अपना भारत देश महान।

लेते जनम जहां भगवान,
वो है अपना देश महान।

मँहके गुलशन-गुलशन सारा,
हो हर कुल में भाई चारा,
हरियाली पर खुशहाली पर,
हमने अपना जीवन वारा।

जन गण मन जिसका गुण गान,
वो है अपना देश महान।

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई,
सबने इसकी शान बढ़ाई,
जब-जब इस पर संकट आया,
जान गंवा कर आन बचाई!

जिस पर तन मन धन कुरबान
वो है अपना देश महान।

मौसम जिसका रंग-बिरंगा,
बहती कल-कल पावन गंगा,
बलिदानों की इस बस्ती में,
छूता है आकाश तिरंगा।

आजादी का भव्य निशान,
वो है अपना देश महान।

—अब्दुल जब्बार

बैर हुआ है क्यूं हरजाई किस्मत को पंजाब से
आओ हिलमिल दूर करें हम नफरत को पंजाब से

किसकी नजर लगी गुलशन को, रौनक गई बहारों से
हंसने लगे अन्धेरे या रब, गायब, चमक सितारों से।

ठहर गया नदिया का पानी, भटकी लहर किनारों से,
मन्दिर मस्जिद मौन, मसीहा चिन्तित थे गुरुद्वारों से।

कुर्सी के लालच ने जोड़ा मज़हब को पंजाब से,
वाहे गुरु की कृपा से निकले, सब दुश्मन की चाल से।

अमन की किरणें फैले फिर गुरुग्रन्थ की अमर मशाल से,
लाखों के दिल जीते हमने है सतश्री अकाल से।

भाई चारे की अपील सिखों के हृदय विशाल से,
गंगा को भी प्यारा है जितना सतलज को पंजाब से।

रूठ गये हैं हमसे अपने, आओ इन्हें मना लें हम।
सारे शिकवे गिले भुलाकर सबको गले लगा लें हम।

इक दूजे के दर्द बाँट लें सारे भरम भुला लें हम,
देश की किश्ती तूफानों से मिलजुल सभी निकालें हम।

जाने ना दो बलिदानों की हसरत को पंजाब से।

—अब्दुल जब्बार

ग़ज़ल

भूगोल अपने मुल्क का बाँटो नहीं यारो
धारा से अपने आज को काटो नहीं यारो
पैगम्बरी लिबास है संतों के पैरहन
इनपे वटन गुनाह के टाँकों नहीं यारो
गुलशन की आबरू है गुलों के उरूज से
क़ीमत अलग से नूर की आंको नहीं यारो
यह मुल्क मुकम्मल है ग़ज़ल की तरह इसे
पढ़-पढ के शेर मुख्तलिफ बाचो नही यारो
मजहब की आड़ ले के सियासत के कूप में
हो जाओगे गुम दूर तक झाँको नहीं यारो

मुक्तक

हम न हिन्दू हैं मुसलमान सिख न ईसाई
कौन है कौम जो इन्सान से पहले आई
हमने मजहब को बनाया हमें मजहब ने नहीं
गले लग जाओ कि सब लोग है भाई-भाई

—आत्म प्रकाश शुक्ल

प्यारी जन्म भूमि मेरी
जिसका हिमालय नाम है
उसका फकत यह काम है
है एक तेरा सन्तरी
प्यारी जन्म भूमि मेरी
मेरे वतन हिन्दोस्ताँ
ऊँचा रहे तेरा निशाँ
हासिल हो तुमको वरतरी
प्यारी जन्म भूमि मेरी
तुझमें है यह गुण आज भी
हैं भीम अर्जुन आज भी
है गोद वीरों से भरी
प्यारी जन्म भूमि मेरी
तेरे वहुत एहसान हैं
तुझपर ही सव कुरवान है
मैं और मेरी शायरी
प्यारी जन्म भूमि मेरी
दुनिया का मुझको गम नहीं
कुछ यह सहारा कम नहीं
है जिन्दगी तुझसे मेरी
प्यारी जन्म भूमि मेरी
है तुझसे ही ऐ नेक खूं
सर सब्ज वागे आरजू
शाखे तमन्ना है हरी
प्यारी जन्म भूमि मेरी

—आरजू जयपुरी

वो कैसे-कैसे लोग थे वो कैसे-कैसे लोग
जिये तो यूं जिये कि वो कहानियों में ढल गये
मरे तो यूं मरे कि अर्थ मौत का बदल गये।

वो हँस के मातृभूमि के लिए शहीद हो गये
जयचंद मीर जाफरों के वो कलंक धो गये
धन्य थे वे लोग उनकी धन्य थी जवानियाँ
कि कायरों में प्राण फूंक जाये वो कहानियाँ
माँ ने उनको घुट्टियों में जाने क्या पिला दिया
कि जब हुये जवान तो जहान को हिला दिया
वो कोख धन्य हो गई जिस कोख में वो पल गये।

वो कैसे-कैसे·········

इधर अभी-अभी हुये थे होंठ उनके साँवले
उधर वो सरफरोशी के लिए हुये उतावले
वो दिन थे हीर गाने के सँवरने और निखरने के
मुहल्ले की किसी कली से पुस्तकें बदलने के
वो इन्कलाब की डगर के कैसे राहगीर थे
जो कोई चीज के लिए हुए नहीं अधीर थे
वो फाँसियों के तख्त देख पाने को मचल गये।

वो कैसे-कैसे·········

वो दासता के दाग अपने खून से मिटा गये
वो अपनी मुस्कुराहटें हमें-तुम्हें थमा गये
बड़े उदार थे कि शीश काटके भी दे दिया
औ कर्ज हम पैं करके अपना नाम भी छिपा लिया
किसी की प्रेयसी समा बुहारती रही डगर
किसी की माँ दुलार से पुकारती रही मगर
वो मौत की दुल्हन भगाके जिन्दगी को छल गये

वो कैसे-कैसे·········

वो निष्कलंक जिन्दगी वो भोली-भाली सूरतें
कि रोम-रोम आज जिनकी याद से सिहर उठे
थे कौन चीज से बने ए हिन्द तेरे लाड़ले
कि जितनी यातना सही वो उतने ही निखर चले
गोलियाँ जहाँ चली वहाँ खड़े मिले सदा
वो आहुति के वक्त पहली पाँत में रहे समा
ओ आरती के वक्त बावरे कहीं निकल गये।

वो कैसे-कैसे........

—आशकरण अटल

(1)

कवि का हृदय दबा है वेदना के भार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से।।
घायल हिमालिया हो डोल-डोल उठा है।
भूगोल त्राहि-त्राहि बोल-बोल उठा है।।
संगम की ज्योति जो थी महाकाश बन गई।
इतिहास लिखते-लिखते वो इतिहास बन गई।।
ईसा को लिए सामने सलीब आ गया।
सुकरात का प्रयाण अब करीब आ गया।।
हो क्रूर कैनेडी को मृत्यु फिर हड़प उठी।
लूथर की रक्त से सनी काया तड़प उठी।।
मंसूर की वो शूली नया घाव दे गई।
गाँधी को लगी गोली नया घाव दे गई।।
जब रक्षकों ने भक्षकों का काम कर दिया।
दो कायरों ने देश को बदनाम कर दिया।।
माँ भारती के मुँह पे धूल फिर मली गई।
हिंसा से अहिंसा की पुजारिन छली गई।।
अपने गुलाब तक गुलाब की कली गई।
गाँधी की डगर इंदिरा गाँधी चली गई।।
बापू की जली धूनी भले राख हो गई।
चौदह अरब दिलों की मगर साख हो गई।।
सूरज की किरन मात हुई अन्धकार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से।।

(2)

सतवंत नाम घोर असतवंत हो गया।
बेअंत हंत एक युग का अंत हो गया।।

ऐसे कुपूत देश के शैदा नहीं होते ।।
अच्छा था ये पंजाब में पैदा नहीं होते ।।
पंजाब जिससे देश का नाता रहा सदा।
भारत के लिए रक्त बहाता रहा सदा ।।
मुरदार कहाँ से मिले सरदार कौम में।
गद्दार कैसे घुस गये खुद्दार कौम में ।।
लज्जा से देश जाति का गौरव झुका दिया।
मस्तक पे दगाबाजी का धब्बा लगा दिया ।।
गोविंद सिंह का चढ़ा पानी उतर गया।
होकर भी अमर हाय भगतसिंह मर गया ।।
गुरुओं की आन वेध दी गोली प्रहार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से ।।

(3)

कहती हैं जाँच वाले डाक्टरों की टोलियाँ।
देवी के तन पे लगी थी बाईस गोलियाँ ।।
भारत के मानचित्र में बाईस प्रान्त हैं।
सब गोलियों के घात से घायल अशान्त है ।।
ज्यों एक-एक गोली लगी सबके वक्ष में।
था पूरा देश देश द्रोहियों के लक्ष्य में ।।
बाईसों प्रान्त का हृदय लोहू लुहान था।
इन्द्रा नही थी वो, पूरा हिन्दोस्तान था ।।
उसके अमर सुयश को कोई हर न सकेगा।
दुनिया से उसका नाम कभी मर न सकेगा ।।
खुद मर गई है मौत अमरता की मार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से ।।

(4)

हत्या के बाद जो भी रक्तपात हुआ है।
वह वज्रघात भी वज्रघात हुआ है ।।

आक्रोश में हजारों लोग मारे गये हैं।
निर्दोष घाट मौत के उतारे गये हैं॥
हर सिख तो क्रूर कृत्य में शरीक नहीं था।
हिंसा का बवंडर उठा वो ठीक नहीं था॥
पर रक्तपात करना तो गुंडों का काम है।
उनका न कोई धर्म न मंदिर न राम है॥
आपस में पुनः प्रीति-रीति खिलनी चाहिए।
गुंडो को गुडई की सजा मिलनी चाहिए॥
षड्यंत्रकारियों की पोल खुलनी चाहिए।
रक्षा में थी कहाँ पे झोल खुलनी चाहिए॥
हिंसा घुसी है कैसे अहिंसा के द्वार से।
डूबी है लेखनी की आंख अश्रुधार से॥

(5)

लेकिन जिन्होंने हत्या पे बाँटी मिठाइयाँ।
या नाँचे भँगड़ा दी परस्पर बधाइयाँ॥
दीवाली पर्व पर न स्नेह ज्योति जगाई।
हत्या के बहे रक्त से दीवाली खूब मनाई॥
उनके भी काम भूल न जाने के योग्य हैं।
वे देश द्रोह की सजा पाने के योग्य हैं।
गुरु ग्रंथियों के नेत्र अब खुल जाने चाहिये।
नफरत भरे दिमाग भी धुल जाने चाहिये॥
वे थे व्यथित तो ऐसा काम क्यों किया गया।
प्रस्ताव शोक वाला क्यों वापस लिया गया॥
सचमुच ही जो हृदय से उन्हें शोक हुआ है।
जिस क्षोभ से सशोक सारा लोक हुआ है॥
तो धर्मपंथ का वे एक सत्यपाल दें।
इन बर्बरों को अपने पंथ से निकाल दे॥
फूलों की दोस्ती नहीं होती अंगार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से॥

कुछ साजिशों का सिलसिला पनपता है अभी भी।
वह उग्रवादी आग उगलता है अभी भी॥
यह हत्याकांड अपनी करामात मानता।
इस हादसे को पहली ही शुरुआत मानता॥
वह अन्य साजिशों की ओर ताक रहा है।
इस क्रूर का इरादा खतरनाक रहा है॥
इस कांड से उसका झुका जुनून नहीं है।
उसके लिये विदेश में कानून नहीं है॥
भारत के तोड़ने का कर प्रचार रहा है।
लंदन से खुले देश को ललकार है॥
इस दुष्ट का न पूरा रवाब होना चाहिये।
कुछ इस तरह का इन्कलाब होना चाहिये॥
अब भी समय है एक लक्ष्य होने के लिए।
इस देश पर लगा कलंक धोने के लिए॥
डायर की जवाबी परम्परा निभाइये।
भारत को एक और उधमसिंह चाहिये॥
हर ईंट का जवाब हो पत्थर प्रहार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से॥

(7)

देवी ने जन सभाओं में ऐलान किया था।
जनहित के लिए अपना नेत्रदान किया था॥
कुछ कहते पूर्ण अनुष्ठान हो नहीं सका।
देवी का कहा रक्तदान हो नहीं सका॥
मैं इस तरह की कोई बात मानता नहीं।
मरकर भी उसकी खोई बात मानता नहीं॥
वह दृष्टि राजनीति की महान कर गई।
अंधी परम्परा को नेत्रदान कर गई॥
है क्लेश, जो कि देश सुरक्षा का भार है।

वह गुप्तचर विभाग गुप्तचर विभाग है ॥
इस गुप्तचर विभाग को झकझोर जगा दें।
या ऐसे कुंभकर्ण को ही आग लगा दें ॥
भारत अखण्डता पे जो बलिदान कर गई।
शोणित की एक-एक बूंद दान कर गई ॥
अब कोई वह अखण्डता न तोड़ने पाये।
दीवार सुदृढ़ता की नहीं फोड़ने पाये ॥
उसके लहू की बूंद को बुबूत बना दें।
इस देश की अखण्डता मजबूत बना दें ॥
तत्पर हो नौजवान समय की पुकार से।
डूबी है लेखनी की आँख अश्रुधार से ॥

—ब्रजेन्द्र अवस्थी

रोज हड़तालें, न जाना काम पर
लूट-हिंसा सब अवामी नाम पर
हाँ हमारे ही पैरों की आंच से
जल गया ओ बुलबुलो सारा चमन
अब न रहना इस तरह से आ गजन!
ओ वतन, मेरे वतन, प्यारे वतन!!

हम कलम से पीर तेरी लिख रहे,
ऐ वतन, तकदीर तेरी लिख रहे,
तू कभी था आदमी का रहनुमा,
जन्म लेते थे यहाँ पर देवगण,
हो वही इतिहास का अंदाज फन!
ओ वतन, मेरे वतन, प्यारे वतन!!

चाहते हम, आदमी हो आदमी,
चाहते हम, एक हो सारी जमीं,
कुछ दरिन्दे देश पूंजीवाद के
बाँटते हैं आदमीयत को कफ़न
तू जगा दे आदमी का देवपन!
ओ वतन, मेरे वतन, प्यारे वतन!!

रोशनी का खत लिखा हर गाँव को,
हर अंधेरे में भटकते पाँव को,
मंजिलों की आहटें देने लगीं
एक सूरज से चली बीसों किरन!
छल न पाये अब तिमिर के राहजन!
ओ वतन, मेरे वतन, प्यारे वतन!!

है जरूरी आज रथ को मोड़ना,
जालसाजों का मनोरथ तोड़ना,

ये दिशाएँ जिस गगन में गोद में
मिल भरें हों जब उनन्चासों पवन!
घूम सबको गंध दे मेरे वतन!
ओ वतन, मेरे वतन, प्यारे वतन!!

—बशीर अहमद मयूख

ग़ज़ल

जले दीप फूल महके चमन इस तरह सजा दो।
मैं गगन उतार लूंगा जरा तुम जो मुस्करा दो॥

ऐ गगन को छूने वालो न बुझाओ जुगनुओं को।
मेरे घर में है अन्धेरा कोई चान्दनी उगा दो॥

ऐ समय के चांद-तारो, न सजाओ मेरा जीवन।
मेरी जिन्दगी यही मेरा देश जगमगा दो॥

यह चट्टान नफ़रतों की जो पड़ी है रास्ते में।
इसे एकता के हाथों मेरी राह से हटा दो॥

ऐ हवाओं के झकोरो कहां आग लेके निकले।
मेरा गांव बच सके तो मेरी झोपड़ी जला दो॥

मुझे बाद में बनाना कोई हिन्दू या मुसलमां।
मैं मरूं कि इससे पहले मुझे आदमी बना दो॥

गीत

हम को अलग नही कर सकता, शोला हो या शबनम
एक है देश एक हैं हम।

एक चमन है अपना जिसमें रंग हजारों खुश्बू एक
अंग हमारे अलग-अलग है लेकिन अपना लोहू एक
भाषाओं के तार कई हैं फिर भी इक सरगम
एक है देश एक है हम।

अलग-अलग लहरें उफनातीं, हैं गम्भीर समुन्दर एक
शिखरों के सौ रंगरूप हैं मुस्काता हिमगिरवर एक
अपनी जगह अटल है पहरी कुछ करें मौसम
एक है देश एक हैं हम

देहरी-द्वार अलग हैं सब के इक चौपाल है गाँव है एक
बेशुमार बरगद की शाखें धूप के अँगना छाँव है एक
सूरज एक गगन पर आगे इक अपना पूनम
एक है देश एक हैं हम।

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई जुदा हैं राहें मंजिल एक
ढंग अलग हैं हर किसी के तूफानों में साहिल एक
जन्म का उत्सव इक जैसा है मौत का इक मातम
एक है देश एक हैं हम।

—पेकस उत्साही

आओ टूटे रिश्ते जोड़ें !

स्याह रात में उल्लू बोले
या चमगादड़ गुजरे-सरसे
इस यतीम बच्चे की दहशत
उस बेवा के मौन अधर से
अब नक्शे में पंजाब हमें इस तरह समझ आएगा।

गेहूँ की बाली के घर में
फौजी बूटों की आवाजें
पर तुझमें जो वह शौमन था
उसको भी किस तरह नवाजें
कल तक नेक इरादों वाला
भगतसिंह की साधो वाला
जोशीली झेलम का पानी इस तरह, फिरत जाएगा।
अब नक्शे में पंजाब हमें इस तरह समझ आएगा।

"तुम बोले विहड़ की भाषा
हमने दी दूध की दुहाई
हाथ जले तो चिढ़ते क्यों हो
इतनी क्यों बारूद उगाई
माना अकाल तख्त फुँका है
हर मंदर का हृदय दुखा है"
पर जो जख्म लगा है मुल्क को कैसे पूर पाएगा।
अब नक्शे में पंजाब हमें इस तरह समझ आएगा।

सौ-सौ बार तुम्हारे पीछे
मनुहारें कर दिल्ली नाँची
पर तुमने सब किया अनसुना
लहू से सनी इबारत बाँची
माहिया से मौत के सफर तक

ध्यान से सुन देश वासी
एकता

एकता बोली—सुनो कवि ।
चाहते हो यदि विजय आकर तुम्हारा पथ बुहारे ।
चाहते हो यदि पराजित शत्रु चरणों को पखारे ।।
राष्ट्र के हर व्यक्ति से कह दो
करे सम्मान मेरा !
मैं तुम्हारे राष्ट्र के हर व्यक्ति हित संजीवनी हूँ ।
मैं रहूँ जिस राष्ट्र में, वह हो पराजित
आज तक सम्भव कभी यह हो न पाया ।।
पूछ लो इतिहास से तुम शक्ति मेरी
करो निश्चल भाव से तुम भक्ति मेरी
राष्ट्र यदि बँध जाय मेरे साथ प्रण में
मैं जिताऊँगी उसे हर एक रण में
साधना से यदि मुझे तुम साध पाओ
राष्ट्र हित रक्षा कवच मुझको बनाओ
विषमता का विष, पिये हर व्यक्ति मन से
मिलेगी क्षमता उसे तब राष्ट्र के प्रत्येक कण से
स्वतः मेरे कंठ से यह शब्द निकले—एकता की जय
एकता ही करेगी इस राष्ट्र को निर्भय
ध्यान से सुन देश वासी !
एकता से बड़ी कोई शक्ति दुनियाँ में नहीं है ।।
एकता से बड़ी कोई भक्ति दुनियाँ में नहीं है ।।

—देवराज दिनेश

देश मेरे

जिन्दगी के आज इस अन्तिम प्रहर में
लिख रहा हूँ डायरी के पृष्ठ कुछ
जो वचन तुझको दिया था वह निभाया है
प्राण देकर आज तेरा ऋण चुकाया है
उखड़ती-सी आ रही है साँस
लड़खड़ाते चल रहे है हाथ
घूमता ही जा रहा है माथ
वक्ष पर गोली लगी है जननि से कहना
कि उसके दूध को मैंने नहीं रण में लजाया
मै लड़ा हूँ सिह की तरह
दस शत्रुओं को मारकर घायल हुआ हूँ
दे दिया उत्तर उन्हें जो कर रहे थे
शत्रु सैनिक एक है हम तीन पर भारी
एक मैने ही नही तेरे सभी
रणधीर वीरों ने यही उत्तर दिया है ।

× × ×

देश मेरे

आज चारों ओर—
तेरी यश पताका झूमती है
देखकर यह, रात के गहरे अन्धेरे में—
चिलकती धूप-सी मुस्कान
मेरे होंठ पर इतरा रही है
स्वयं अपने वक्ष से गोली—
निकाली किरच से मैंने
घाव से यह रक्त—
मास की कमी पूरी कर रहा है ।

मोर्चे से एक सैनिक
समझ कर बेहोश मुझको
छोड़ खन्दक में गया है
जब मुझे उसने उठाया पीठ पर अपनी
हुआ महसूस यह मुझको
कि सारे देश ने मुझको उठाया है।

× × ×

देश मेरे

सिर्फ मैं अभिमन्यु इस रण में लड़ा हूँ
नील अम्बर की घनी अमराइयों में
उड़ किया है युद्ध मैंने !
और रिपु के प्रबल सेबर जेट
मैंने इस तरह तोड़े
कि जैसे कभी बचपन में
रहा हूँ तोड़ता मैं विहँस माटी के घरौंदे
और उसके दुर्ग जैसे विकट पैटन टैंक
मैंने इस तरह रौंदें, कि उसके साथ
उसका दम्भ मिट्टी में मिला है।
सच कहूँ तो मैं निहत्था था
तुम्हारे शत्रु के आगे
किन्तु मैं बलिदान का रक्षा कवच पहिने
एकता की शक्ति लेकर,
भिड़ गया रण में
मैं बँधा था प्रिय !
तुम्हारे प्यार के प्रण में
दशम गुरु के वाक्य
मैंने सत्यकर दिखला दिया है
मैं चिड़ियों से बाज पिटाऊँगा
सवा लाख से एक भिडाऊँगा
नेट से सेबर जेट के—
पिटने की भी यही कहानी

शस्त्र नहीं लड़ते हैं रण में—
लड़ती सदा जवानी।

× × ×

देश मेरे

प्राण प्यारी उत्तरा से बोल देना
वह न मेरे वास्ते आँसू बहाये
प्यार से पाले, परीक्षत कोख में उसकी रहा है पता
और मेरे वंश में फिर आ रहा है—
क्रुद्ध जनमेजय !
मैं स्वयं ही जन्म लूँगा
नागदाह अनेक सीमा पर रचाऊँगा
क्रूर रिपु का अहम् मिट्टी में मिलाऊँगा ।।

देश मेरे

जिन्दगी के आज इस अन्तिम प्रहर में
दे यही आशीष !
प्यार से तू आज मुझको दे यही बखशीष
जन्म जब भी लूँ तुझी में लूँ।
प्राण जब भी दूँ तुझी को दूँ ।।

—देवराज दिनेश

तब कहा बलिदान ने
सुन राष्ट्र कारण
चाहते हो यदि विजय आकर तुम्हारा भाल चूमे
चाहते हो पराजित शत्रु तजकर शस्त्र घूमे
और रण से भाग जाए !
राष्ट्र के हर व्यक्ति से कह दो
मुझे मन में बसाये—
दे हृदय में स्थान।
मैं करूँगा तब तुम्हारे राष्ट्र का गुणगान
मैं रहूँ जिस व्यक्ति के अन्तःकरण में
वह नहीं फिर समझता है भेद जीवन और मरण में
विजय बन चेरी जिताती है उसे—
हर एक रण में
मैं जहाँ होता वहाँ पर
युद्ध के नक्शे बदलते हैं क्षणों में
दहकते अंगार हैं तब रजकणों में ।।
मैं नया इतिहास लिखवाता रहा हूँ
बन अडिग विश्वास मुस्काता रहा हूँ ।।
स्वतः मेरे कंठ से ये शब्द निकले
हो अमिट बलिदान की जय
है जहाँ बलिदान की यह भावना—
वह राष्ट्र अक्षय।

—देवराज दिनेश

दिल से नफरत की आँधी का रूख मोड़ दो,
सारे अलगाव के रास्ते छोड़ दो
टूटी बिखरी पडी दिल की जो डालियाँ
तुम उन्हें प्यार के पेड़ से जोड़ दो

प्यास बिन नीर पीने से क्या फायदा
श्रम नहीं तो पसीने से क्या फायदा
धड़कनें जिसमें अपने वतन की ना हों
जिन्दगी ऐसी जीने से क्या फायदा

फूल बोले हमारा चमन एक है
तारे बोले हमारा गगन एक है
आँख इस पार संभल कर उठाना जरा
दुनियाँ वालो हमारा वतन एक है।

छाँव पहले लगी मुझको अपनी बड़ी
फिर लगी मुझको मेरी ही जननी बड़ी
जन्म से मेरा बोझा उठाए हैं जो
सबसे ज्यादा लगी मुझको धरनी बड़ी।

एकता शबनम

(1)

हाय ये कैसा मौसम आया
गायक गाना भूल गए
बुलबुल भूली गजल पपीहे
प्रेम तराना भूल गए।

जाने हवा चली ये कैसी
उगे बबूल गुलाबों में
नफरत लिखने लगी कोयलें
खुशबू भरी किताबों में

बम्ब और बारूद की भाषा इतनी भायी दुनिया को
आग लगाना याद रहा हम आग बुझाना भूल गए।

(2)

पूजा बनी अर्थ की सेवा
मजहब एक जुनून हुआ
मन्दिर मस्जिद के आँगन में
इन्सानों का खून हुआ

झूठे प्रान्तवाद ने बढ़कर यूँ भरमाया लोगों को
ईंटों का घर याद रहा हम दिल का ठिकाना भूल गए।

(3)

जाति-पाँति और वर्ग भेद का
हमने वो नक्शा खींचा
भाई के लोहू से भाई ने
अपना दामन खींचा

नानक और पिरती के बेटे तुलसी-सूरा के वंशज
ऐसे बने विदेशी अपना गाँव पुराना भूल गए।

(4)

दूध-दही वाली धरती पर
बारूदों के दाग मिले
जलते हुए मकान मिले
और बुझते हुए चिराग मिले

उधर बिलखती है ये गुड़िया तड़पे उधर खिलौना वो
कौन है वो जो बच्चों तक को गोद उठाना भूल गए।

(5)

कौन है हिन्दू, कौन मुसलमान
कौन सिक्ख ईसाई है
एक तरह से ही होती है
सबमें यहाँ विदाई है।

जब तक डेरा पड़ा यहाँ पर धरती का कुछ कर्ज चुका
उनका जीना क्या जो माँ का कर्ज चुकाना भूल गए।

—नीरज

ईद का हो मिलन या हो होली मिलन।
यह मिलन तो मिलन है, मिलन के लिए।
हम जुड़े हैं यहाँ पर, मिलन के लिये।
हम मिले हैं यहाँ पर, मिलन के लिए।

जाने कब से समन्दर का क्रम चल रहा,
ये लहर कब रुकी है, ये वह जायेगी।
आओ नफरत से हटकर मिलें प्यार से,
सारी दौलत धरा पर ही रह जायेगी।
होंठ का प्यार तो यार व्यापार है,
प्यार होता है दिल से, मिलन के लिये।
आँख में आँख हो तो मिलन के लिये,
बाँह में बाँह हो तो मिलन के लिये। हम जुड़े हैं······

देख लो तुम जहाँ, जो मिला प्यार से,
वह सदा ही सदा की, अमर हो गया।
प्यार में कैसे मिलते, चमन देख लो,
फूल में वन्द कैसे भँवर सो गया।
जर्रा-जर्रा यहाँ पर, मिलन के लिये,
गंगा यमुना को देखो, मिलन के लिये।
दीप पर हैं पतंगे, मिलन के लिये,
जल रहे किस कदर ये मिलन के लिए। हम जुड़े हैं···

चाहते हैं कि संसार को दें हम बदल,
किन्तु अपने को भी हम वदल न सके।
चाहते हैं जहाँ को सम्हालें मगर,
लड़खड़ाते रहे हम सम्हल न सके।
आओ अपना पराया भुलाकर सभी,

हों समर्पित हृदय से मिलन के लिये।
गर जनम हो हमारा मिलन के लिये,
गर मरन हो हमारा, मिलन के लिये। हम जुड़े हैं...

—गोपाल प्रसाद मुदगल

पूजा को हमेशा यहाँ फरियाद ने मारा
तुमको भी अमन चैन के अपराध ने मारा
निश्छल परिन्दें को सदा सय्याद ने मारा
संतों को आदमी की ही औलाद ने मारा
मारा है जिन अंधेरों ने उनको न वढ़ाओ
फिर विप वुझा यह तीर मत कमान चढ़ाओ
सोये हुये पखेरू हैं उनको ना उड़ाओ
हम थक गये हैं हमको ना आपस में लड़ाओ
पंजाव अव तो लौट आओ उस मुकाम पर
तुमने जो माँगा दे दिया अपनों के नाम पर
विछड़े थे जिस जगह से तमंचों की तान पर
हम इंतजार कर रहे हैं उस मकान पर
दरवाजे खोल रक्खे पहरेदार नहीं है
रास्ते में और दिलों में भी दीवार नहीं है
आना नये रिश्तों की शुरुआत करेंगे
वच्चों के खानदान-घर की वात करेंगे
मिलकर के समझ लेंगे गये साल की वातें
भुलवा के भूल जायेंगे उवाल की वातें
चौपाल में ले आयेंगे सुरताल की वातें
माँ से कहेंगे वो करें ननिहाल की वातें
संतों की शहादत ने की राहत की रिहाई
चौवीस जुलाई चलो कुछ काम तो आई।

—जगदीश सोलंकी

उसको दुनिया की कोई ताकत दवा सकती नहीं
कोई विजली उस नशेमन को जला सकती नहीं
लाख शोलों को हवा दे आमरीयत के गुलाम
दामने जम्हूरियत पर आँच आ सकती नहीं

ऐशो इशरत का खुमार और शानों शौकत का सरूर
मालो दौलत का नशा हुसनो जवानी का गरूर
वक्त की धारों में तिनकों की तरह वह जायेंगे
हाँ, शहीदाने वतन के नाम अमर रह जायेंगे

वहशयाना सहरों शाम न होने देंगे
खुद को हम मोरिदे इल्जाम न होने देंगे
आओ ए हम वतनो, आज हम एक अहद करें
आयमियत को तो वदनाम न होने देंगे

आमने सद चाक सीने का सलीका सीखिए
जाम पीना है तो पीने का सलीका सीखिए
अपनी खातिर जीने वालों से यह कहना है मुझे
देश की खातिर भी जाने का सलीका सीखिए

—हकीम युसुफ हुसैन यूसुफ

नज्म

पैगाम-ए-शायर

मुहब्बत की ज्योति से दिल जगमगायें
उठो हिन्द को रश्के जन्नत बनायें
ये देर और कावा के झगड़े चुका दो
निगाहों से पर्दा दूई का हटा दो
अमीरों-गरीबों के दिल भी मिला दो
फिर उजड़ी हुई बस्तियों को बसा दो
मिले जो ताअस्सुब की तामीर ढाहा दो
मुहब्बत की ज्योति से दिल जगमगा दो
उठो हिन्द को रश्के जन्नत बना दो
ये राम व रहीम और नानक मसीहा
ये मन्दिर ये मस्जिद ये गिरजा कलीसा
ये तौरेत व इनजील व कुरआन व गीता
कहीं भी अगर जिक्र आ जाये इनका
वहीं पर जाअजीम गरदन झुका दो
मुहब्बत की ज्योति से दिल जगमगा दो
उठो हिन्द को रश्के जन्नत बना दो
जुबां से हो नफरत न कल्चर से नफरत
न ऊपर से प्यारा और न अन्दर से नफरत
नई पोद को ये सबक तुम पढ़ा दो
मुहब्बत की ज्योति से दिल जगमगा दो
उठो हिन्द को रश्के जन्नत बना दो
जुबां पर हो इन्सानियत का तराना
नमूना हो दुनिया में अपना फसाना

असंख्य वर्षों पहले
राम ने रावण को मारा था
लेकिन रावण मरकर भी नहीं मरा
हर साल हम अपनी झेंप मिटाते हैं
असली रावण का कुछ बिगाड़ नहीं सकते
इसलिये उसका पुतला जलाते है
मैं पूछता हूँ तुम सब मिलकर
इस बेचारे रावण के पीछे क्यों पड़े हो ?
हर दशहरे के दिन पुतले के सामने
माचिस लिये खड़े हो
इतने साल से जला रहे हो
लेकिन नहीं जला पाए
ना भविष्य में जला पाओगे
कब तक
पब्लिक को बेवकूफ बनाओगे
अगर रावण
वास्तव में मर गया होता
तो पंजाब में राक्षसगण
उत्पात नहीं मचाते
खालिस्तान के नारे नहीं लगाते
भारत मां के अंग काटने का
प्रोग्राम नहीं बनाते
अगर रावण वास्तव में मर गया होता
तो
आसाम में अत्याचार नहीं होता
और लंका में
तमिल भाषियों की लाशों का व्यापार नहीं होता
अगर रावण वास्तव में मर गया होता

तो
बेवस सीताओं पर बलात्कार नहीं होते
और ममता के लवकुश रूपी नयन
खून के आँसू नहीं रोते
एक बात याद रखो
कालिख के कारण ही
रोशनी की कद्र होती है
आप बेकार कोशिश कर रहे हैं
अंधेरे पर हर तलवार
बेअसर होती है।
इसलिये मैं कहता हूँ
रावण को जलाने में समय मत गँवाओ
और अपनी सोई हुई
आत्मा में छिपे हुए राम को जगाओ।

—हुल्लड़ मुरादाबादी

जितना नूर चढ़ाया तुम पर,
उतने ही मगरूर हो गए !
जन-जन को घर-फूंक जशन
दिखलाने को मजबूर हो गए !

हठधर्मी अपनी सीमा से,
बढ़ते ही हिंसा बन बैठी !
अलग पृथकतावादी ले,
तलवार पड़ोसी पर तन बैठी !

लूट, लपट, हत्या भी कोई,
राजनीति का चमत्कार है !
विघटन के इस अघ-नर्तन का,
बहुत दूर से नमस्कार है !

प्रातः का भटका, संध्या तक,
सकुशल घर वापस आ जाये।
जो घर-द्वारे पर ही भटका,
उसे कौन कैसे समझाये।

आओ मेरे भारत-भक्तो,
"मत", "पंथो" को राह दिखायें।
एक राष्ट्र में एक आत्मता—
का गुरुतम, गुरु मंत्र सिखायें।

स्वतंत्रता- संग्राम- सिपाही,
विजय-विपिन में कहाँ खो गए।
जितना नूर चढ़ाया तुम पर,
उतने ही मगरूर हो गए।

—इन्दिरा इन्दु

क्यों चलने में डरता राही,
पंजाबी खुशहाल सड़क पर !
क्यों कट कर गिर रहे सुजन,
दुर्जन की हिंसक तड़क-भड़क पर !

क्यों अकाल ही काल-सर्प ने
संतों की सुधियाँ डस डाली !
नानक-सा सद्गुणी पथ-दर्शक,
तज दुनियाँ अलग बसा ली।

भारत के प्रहरी होकर भी,
देश द्रोह षडयंत्र रच रहे।
खुली लूट हत्या के नंगे,
नाच और हुड़दंग मच रहे।

किस निमित्त विस्फोट हो रहे,
शासन की चलती गाड़ी में।
किस कारण फेंकी चिनगारी,
राष्ट्रीयता की साड़ी में।

कौन आज उत्तर देगा इस,
राष्ट्रघातिनी मन मानी का।
कौन आज अनुगमन करेगा,
स्वतंत्रता की कुरबानी का।

बौद्ध, जैन, मुस्लिम, ईसाई,
हिन्दू, सिक्ख सबकी माँ भारत।
जो अखण्ड भारत को खण्डित,
चाहेगा, होगा वह गारत !

अत्याचारी से पूछो सव,
अभय कंठ से कड़क-कड़क कर।
क्यों चलने में डरता राही,
पंजावी खुशहाल सड़क पर।

—इन्दिरा इन्दु

चाक दामा भी हो
कुछ परिशां भी हो
फिर भी जश्ने वहारां
मनाते चलो।
दिल के आलम पर
हक की आवाज पर
नगमा-ए-महरो उलफत
सुनाते चलो।
एक मिट्टी के तुम सब
खिलौने बने
एक वाजार में तुम
सजाए गए
टूट जाओगे देखो
जो टकराओगे
खुद को वरवादियों से
वचाते चलो।
दूर मंजिल भी है
राह दुश्वार भी
फिर भी अज्मे जहाँ का
सहारा लिये
राह में थक के वैठे हुए
जो मिलें
कारवाँ में उन्हे भी
मिलाते चलो।
दिल को इस तरह
छेड़ो के दिल जाग उठे
दिल की सोई हुई
धड़कने जाग उठे

दौरे बेगानगी का
नशा तेज है
सो न जाए ज़माना
जगाते चलो।

तेज़ रौ वक्त के
पाँव रुकते नहीं
कब्र तलक हसरतें
अर्शियाँ साथियो
सैले आफत में बुनियाद
रखते चलो
बिजलियों में नशेमन
बनाते चलो।

—जमीला बानो

कुमकुम है, सन्दूर भी है, इस देश की माटी चन्दन है।
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में, भारत तेरा वन्दन है॥

उत्तर में माथे तेरे कश्मिरी मुकुट सुशोभित है,
सागर की लहरें दक्षिण में तेरे रूप पर मोहित हैं।

पुरवा-पछुवाये करती मंगल गीतों का क्रन्दन है,
मन्दिर, मस्जिद, गुरुदारों में, भारत तेरा वन्दन है।

देश द्रोही कुछ लोग यहाँ अपनी औकात बताते हैं,
कुछ गुमराह हुए भाई यूंही उत्पात मचाते हैं।

लाल तेरे होने ना देंगे, तेरी प्रतिमा का खण्डन है,
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में, भारत तेरा वन्दन है।

वीर शिवा और भगतसिह, आजाद सभी बलिदानी है,
वीर जवाहर, गांधीजी की गाथा नहीं पुरानी हैं।

जिसने तुझे स्वाधीन किया, उन वीरों का अभिनन्दन है,
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में, भारत तेरा वन्दन है।

विश्व एकता सिखलाते, हम लड़े कोई कारण होगा,
कलुप दृष्टि तुझ पर डाली तो रूप यही धारण होगा।

सर पर कफन, हाथ बन्दूकें, होठों पर जन गण मन है,
मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में, भारत तेरा वन्दन है।

—श्रीमती कुसुम जोशी

देश हम सबका है लोगों, सबका ही यह प्राण है
जिन्दगी कर दो निछावर इसमें भी इक आन है
देश पर मिटने से तुमको
अमरता मिल जायेगी
बात बलिदानी की यह तो
सदियां भी दोहरायेंगी
जिन्दगी के गम को छोड़ो कुछ ही दिन मेहमान है
देश हम सबका है लोगों, सबका ही यह प्राण है

भाई-भाई झगड़ते हो
कैसे तुम इन्सान हो
जाति-पांति के मरम में
क्यों बने नादान हो
बस ही पन्थों का कथन है, एक ही भगवान है
देश हम सबका है लोगों, सबका ही यह प्राण है

देश द्रोही भवरों से
हर पल सजग रहना तुम्हें
टुकड़े करते देश के
उन पर नजर रखना तुम्हें
कोई तुमसे यह ना कह दे, यह तो खालिस्तान है
देश हम सबका है लोगों, सबका ही यह प्राण है।

—श्रीमती कुसुम जोशी

एक अमृत का सरोवर है वतन
प्यार की पावन धरोहर है वतन
आज कल उसके हृदय में घाव हैं
यह उसी के तप्त मन के भाव हैं
कह रहा है जागने का वक्त है
नींद में गहरी न सोना चाहिए
अश्रु मेरी आँख से जो भी गिरे
आपकी आँखों में होना चाहिए।

फूल की गंधे कभी लड़ती नहीं
वे घृणा की पुस्तकें पढ़तो नहीं
प्यार की प्यासी कला की उँगलियाँ
दुश्मनी की मूर्त्तियाँ गढ़ती नहीं
सिंधु से उड़ते हुए घन ने कहा
प्यार से भीगे हुए मन ने कहा
ग़ैर की आँखों के आँसू से कभी
अपना दामन भी भिगोना चाहिए
अश्रु मेरी आँख से जो भी गिरे
आपकी आँखों में होना चाहिए।

हम पवन थे, आँधियों में बँट गए
पृष्ठ थे हम, हाशियों में बँट गए
जन्म से तो सिर्फ हम इंसान थे
हम स्वयं ही जातियो में बँट गए
और फिर यह एक अनहोनी हुई
आदमी की मूर्त्ति फिर बौनी हुई

लग गया है धर्म के आँचल पे जो
ख़ून का वह दाग़ धोना चाहिए
अश्रु मेरी आँख से जो भी गिरे
आपकी आँखों में होना चाहिए।

—कुंअर बेचैन

कितना भी हल्ला करे, उग्रवाद उद्दंड
खंड-खंड होगा नहीं, मेरा देश अखंड
मेरा देश अखंड, भारती भाई-भाई
हिन्दू - मुस्लिम - सिक्ख - पारसी या ईसाई
दो-दो आँखें मिलीं, प्रकृति माता से सबको
तीन आँख वाला कोई दिखला दो हमको

अल्ला-ईश्वर-गोड या खुदा सभी हैं एक
अलग-अलग क्यों मानते, खोकर बुद्धि-विवेक
खोकर बुद्धि-विवेक, जीव जितने हैं जग में
लाल रंग का खून मिले सब की रग-रग में
फिर क्यों छूत-अछूत नीच या ऊँचा मानें
हरा खून मिल जाय किसी में, तो हम जानें

लालच दुश्मन से मिले, उसको ठोकर मार
जन्म लिया जिस देश में, उसे दीजिए प्यार
उसे दीजिए प्यार, घृणा की खाई पाटो
जिस डाली पर बैठे हो उसको मत काटो
बनकर के गद्दार, बीज़ हिंसा के बोते
ऐसे मानव, पशुओं से भी बदतर होते

जिनके सिर पर चढ़ा है, हत्या-हिंसा-खून
अक्ल ठीक उनकी करें आतंकी कानून
आतंकी कानून, विदेशी शह पर भटकें
जीवन कटे जेल में, या फाँसी पर लटकें
न्याय पालिका जब अपनी पावर दिखलाए
उग्रवाद-आतंकवाद जड़ से मिट जाए

सींक अकेली क्या करे, पड़ी-पड़ी पछताय
मिल जाए जब झुंड में, झट झाड़ू बन जाए

झट झाड़ू बन जाय, संगठन शक्ति दिखाए
दुश्मन रूपी कूड़े को बाहर पहुँचाए
काको की झाड़ू जब जौहर दिखलाती है
काका कवि की कलम, कलामुंडी खाती है।

—काका हाथरसी

कभी जुनूं तो कभी आगही की कैद में हूं
मैं अपने जेहन की आवारगी की कैद में हूं

शराब मेरे लबों को तरस रही होगी
मैं रिन्द तो हूं मगर तश्नगी की कैद में हूं

ये किस खता की सजा में हैं दोहरी जंजीरें
गिरफ्त मौत को है जिन्दगी की कैद में हूं

न कोई सम्त, नजारा, न मंजिले—मकसूद
युगों-युगों से यूं ही बेरूखी की कैद में हूं

न जाने कितनी नकावें उलटता जाता हूं
जनम-जनम से मैं बेचेहरगी की कैद में हूं

यहां तो पर्दा-ए-सीमीं पै चल रही है फ़िल्म
मैं जिस जगह हूं वहां रौशनी की कैद में हूं

किसी के रुख से जो पर्दा हटा दिया मैंने
सजा ये पायी कि दीवानगी की कैद में हूं

जहां मैं कैद से छूटूं वहीं पे मिल जाना
अभी न मिलना, अभी जिन्दगी की कैद में हूं

गुनाह ये है कि क्यों अपना नाम रक्खा 'नूर'
वो दिन और आज का दिन तीरगी की कैद में हूं

—कृष्ण बिहारी 'नूर'

हम अनेक में एक, यही तो शक्ति-समन्वित नारा।
कोई धारा अलग न जब तक, बहती अन्तर्धारा॥
ऐसा देश जहाँ की संस्कृति, इन्द्रधनुष है सजा रही।
ऐसा देश जहाँ वाणी खुद, अपनी वीणा बजा रही॥
ऐसा देश जहाँ धर्मों ने, मानवता का पाठ लिया।
जिसके चरणों में सिर धर कर, अखिल विश्व ने अमृत पिया॥
जो विजयी बन रहा सदा से, नहीं किसी से हारा।
हम अनेक में एक, यही तो शक्ति-समन्वित नारा॥
शांति प्रगति के दुश्मन तो, गद्दारी का जीवन जीते॥
अपनी माँ की गर्दन पर रख छुरा रक्त उसका पीते॥
गिने चुने इन सम्प्रदायवादी तत्वों की जड़ काटो।
आज एकता धर्म देश का, यह सुख आपस में बाँटो॥
आज़ादी आज़ाद न जब तक, नहीं टूटती है कारा।
हम अनेक में एक, यही तो शक्ति-समन्वित है नारा॥
भाषा के विवाद ने भाषा का माधुर्य खो दिया है।
आड़ लिये इसकी, लड़ने-भिड़ने का बीज बो दिया है॥
राष्ट्र एक है, भाषाएँ कितनी ही हों, क्या फर्क पड़े?
लेकिन एक दूसरे की जड़ काट रहे क्यों खड़े-खड़े?
खंडित है व्यक्तित्व अगर तो, देश अखंड न है सारा।
हम अनेक में एक, यही तो शक्ति-समन्वित है नारा॥
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, सबकी है भारतमाता।
सर्व-धर्म समता-सम्मान, यहाँ गौरव-गरिमा पाता॥
मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरुद्वारों में एक ईश रहता।
सामासिक-सस्कृति में सप्त स्वरों में घुला राग बहता॥
भाई से भाई न मिले, यह तो न हुआ भाईचारा।
हम अनेक में एक, यही तो शक्ति-समन्वित है नारा॥

—श्री मेघराज मुकुल

हिन्दू-सा लगे है, न मुसलमाँ-सा लगे है
हर शख्स मेरी आँख को इन्साँ-सा लगे है

मासूम चरागों को बुझाता हुआ दंगा
आँधी-सा लगे है कभी तूफाँ-सा लगे है

इन्सान का इन्सान लहू चूस रहा है
यह कैसा फरिश्ता है जो शैताँ-सा लगे है

जब-जब भी हवा फिरका परस्ती की चले है
गुलशन भी मेरा मुझको बयाबाँ-सा लगे है

जब से है 'जवाँ हाथ' में इस मुल्क की किस्मत
मुश्किल का हर इक काम भी आसाँ-सा लगे है

खुश्बू का अमीं है 'नये मौसम का निगेहबाँ'
हर एक बयाबान गुलिस्ताँ-सा लगे है

'मैंकश' है मेरे मुल्क का हर शख्स सुदामा
हर वक्त गरीबी में भी सुल्ताँ-सा लगे है।

मैंकश अजमेरी

प्राचीन भारत में
सांझ घिरते ही
नगाड़ों की आवाज पर
युद्ध बन्द हो जाता था

अपने विरोधी की पीठ पर
कोई इन्सान, कभी भी
हथियार नहीं उठाता था
शरणागत की हिफाजत के लिए
जान लुटा देते थे लोग

और
ईश्वर के समक्ष
शीश झुकाए आत्मा को
परमात्मा समझा जाता था

लेकिन अब

मेरे आजाद देश के
कुछ हिंसा के पुजारियों को
वह नैतिक आचरण
निश्चय ही नहीं भाया है

इसलिए उन्होंने

बापू को प्रार्थना सभा में
इन्दिरा गांधी को
अपने अंगरक्षकों द्वारा
अपने ही घर में

संत लोंगोवाल को
गुरु ग्रन्थ साहिब के समक्ष

शीष झुकाते समय
विश्वासघात का अंधड़ चला कर
गोलियों की बौछार करके
खून मे नहलाया है।

—श्री मनजीत सिंह

नफरत की छुरी और मुहब्बत का गला है
फरमाइये यह कौन से मजहब में खड़ा है

मजहब ने ही मख्लूक को खालिक से मिलाया
मजहब ने ही माँ-बाप का हक सबको जताया
मजहब ने बहन-भाई के रिश्ते को बताया
मजहब ने ही जीने का हर अन्दाज सिखाया

मजहब ही था इन्सान बनाने का सहारा
मजहब ही चलाने लगा इन्सान पै आरा

यह सिख है वह हिन्दू, यह ईसाई वह मुसलमान
पहचान के आते नहीं आँधी हो कि तूफान
पहुँचाते है राहत कभी पहुँचाते हैं नुकसान
कुफ्र उनके लिये है कोई शय और न ईमान

पानी का हवा का कोई मजहब नहीं होता
इनको किसी फिरके से भी मतलब नहीं होता

परवत हो कि झरना हो कि वन सबके लिये है
हँसता हुआ चाँद और गगन सबके लिये है
सूरज हो कि सूरज की किरन सबके लिये है
हर शामे वतन सुबहे वतन सबके लिये है

इन्साँ के लिये सब है तो हैवाँ के लिये भी
और आज का इन्साँ नही इन्साँ के लिये भी

सबने तो किया होगा समुन्दर का नजारा
लड़ता है कभी घोर से बहता हुआ धारा
टकराया है गर्दू पे कभी तौर से तारा
आपस में लड़ा है कोई पुर नूर सहारा

राहत भी उठायेंगे मुसीबत भी सहेंगे
एक साथ थे एक साथ है एक साथ रहेंगे

हमला कभी कर देती है जब बाहरी ताकत
मालूम जभी होती है हर खून की कीमत

वह खून भी धरती पै बहा हाय रे नफरत
जिस खून से हो सकती थी धरती की हिफ़ाजत
आ जाये समझ में अगर अरवावे चमन की
एक खून का कतरा भी अमानत है वतन की

आफत जदा इन्सानों की खिदमत है बड़ी चीज
कर लें यह इबादत यह इबादत है बड़ी चीज
अपनायें मुहब्बत को मुहब्बत है बड़ी चीज
हाथ आये यह जन्नत तो यह जन्नत है बड़ी चीज
हिन्दू किया पैदा न मुसलमाँ किया पैदा
कुदरत ने तो हर एक को इन्साँ किया पैदा

जिन्दा करें हम प्यार को नफरत को मिटायें
शुभ दिन के बहाने से गले सबको लगायें
हर एक बड़े त्योहार को मिल जुल के मनायें
एक होके हँसी फिरका परस्ती की उड़ायें
खुद से कोई हाथों में अगर हाथ न देगा
बन्दों का तो क्या जिक्र खुदा साथ न देगा।

—नजीर बनारसी

पीड़ित पड़ोसी

भारत की उन्नति की लहलही लता देख।
आक ढाक पाक का क्यों हिया सरसायेगा।
अपने तो घर में बचा न कुछ फूँकने को।
पड़ोसी के घर अब आग भड़कायेगा।
पूँछ अमरीका रूपी बिल्ली को पकड़वा।
कब तक जियाउल मूँछ फरकायेगा।
वाहे गुरु हर हर बम साथ बोलें हम।
तेरा खुदा भी न हमें जुदा कर पायेगा।

—ओम प्रकाश आदित्य

"नफरत के वीज न सीचो......"

नफ़रत के वीज न सींचो,
मत डोर प्रीत की खींचो,
खेती कर लो तुम प्यार की
कह गये संत, फकीर, औलिया
दुनियाँ है दिन चार की।

क्यूँ ऊँच-नीच के कारण,
सुलगे होली प्राणों की
सब किस्मत का लेखा है
ग़लती क्या इंसानों की
पंडित का या हरिजन का
है खून सरीखा सबका
तोड़ो ईंटें दीवार की।

मानवता से बढ़कर तो
है धर्म नहीं धरती पर
क्यूँ खून बहाते हो तुम
मजहब की आड़ें लेकर
गुरुबानी हो या गीता
कब धर्म इजाज़त देता
इस खून भरी तकरार की।

बटवारों से क्या होगा,
इन नारों से क्या होगा,
ग़र किश्ती टूट गई तो
पतवारों से क्या होगा
इस आजादी को जानो
इसकी कीमत पहचानो
छोड़ो भाषा तलवार की।

हम सबका वतन यही है
हम सबका चमन यही है
हम एक डाल के पंछी
जीवन और मरण यहीं है
फिर क्यूँ हिंसा की बानी
क्यूँ रोज-रोज कुरबानी
बातें कर लो कुछ प्यार की।

कह गये संत, फकीर, औलिया
दुनियाँ है दिन चार की।

—प्रभा ठाकुर

निशा हटाता हूँ

आओ तुम्हें बुलाता हूँ
आओ तुम्हें सुनाता हूँ
जिस पथ शूल, अंगार न हों, उस पथ से नाता तोड़ दो।
जिस पथ शूल, अंगार न हो, उस पथ पर चलना छोड़ दो।

पल भर का यह प्राण वसेरा
क्षण भर की ठकुराई है।
सुबह क्षणिक है, साँझ मलिन है,
रजनी सदा पराई है।
उसका जीवन धन्य समझ लो, उसकी गुण गाथा अंकित हो
जिसने मंजिल तक चलने को
अपनी डगर बनाई है।

समय-रेत पर वही टिका है
झूमा जो तूफानों में।
जिसने बिजली कैद करी हो
विष पीकर मुस्कानों में
जो लहरों से जूझ रहे हैं, जिन्हें न साहिल प्यारा है।
ऐसे कितने रतन मिलेंगे
मुर्दा दिल इन्सानों में।
आओ राह दिखाता हूँ
मन की चाह सुनाता हूँ
ज्ञान सँवर ले, कला निखर ले, पथ को ऐसा मोड़ दो।
जिस पथ शूल, अंगार न हो, उस पथ से नाता तोड़ दो।

क्या सपनों की बात, बहारें
लुट जाती पतझारों से।
कैसे मिले बयार, सुलगते
पीड़ा के अंगारों से ?

कैसे जिये विवश मानवता, घुटन भरे मैदानों में ?
कैसे सपने सच हो जायें
इन झूठी मनुहारों से ?

ऐसा पथ अपनाओ जिसने
पौरुष को ललकारा हो।
ऐसा सपन सजाओ जिसने
समता को अधिकारा हो।
ऐसी जलन जलाओ जिससे जल जाये यह अर्थ विषमता

ऐसा पूजो रूप जिसे
बहुजन ने स्वयं सिंगारा हो।
आओ निशा हटाता हूँ
आओ दिशा बताता हूँ
अरुणोदय सी रश्मि बिखेरो, तिमिर अर्गला तोड़ दो
जिस पथ शूल, अंगार न हों, उस पथ से नाता तोड़ दो।

—डा० प्रकाश आतुर

किसने सौंपा है मधुऋतु को
इन जलते हुए अंगारों को।

यह कौन चुरा कर ले जाता
उगते सूरज की ज्योति किरन?
यह कौन धुंधलका वन छाया
जिससे ओझल वल्लरि, कानन?

यह क्यों इतनी बेचैनी है
इस मौसम की तरुणाई में?
क्यों स्वर घुटकर मर जाता है
इस गंधमयी अमराई में?

यह कौन लूटने को चौकस
इन आती हुई बहारों को?
किसने सौंपा है मधुऋतु को
इन जलते हुए अंगारों को?

बेचैन हुआ वातास, दिशायें
क्षुब्धमना सिर धुनती हैं।
कोहरे का ऐसा जाल बिछा
हर छवि धुंधली-सी दिखती है।

हिमशीत हुई जाती ज्वाला
हर स्वर्ण किरण अब काली है।
मेरे युग की जनगंगा पर
हर घिरो घटा अँधियाली है।

यह कौन फेंकता जाता है
उपवन पर इन पतझारों को?
किसने सौंपा है मधुऋतु को
इन जलते हुए अंगारों को?

यह सब उनकी साजिश है
जो गंध चुराने वाले हैं
धरती के रूपम, शृंगारित
हर छंद चुराने वाले हैं।

जो रंग दिये कुसुमायुध ने
ये रंग चुराने वाले हैं।
सूरज की सप्तकिरण पी कर
अंधियार लुटाने वाले हैं।

ये सौदागर युग-ऊष्मा के
पहचानो रंगे सियारों को।
ये ही तो शायद सौंप रहे
मधुऋतु को इन अंगारों को।

लो शपथ, तुणीर उठाओ फिर
मौसम ने तुम्हें पुकारा है।
कोई बटमार न बच पाये
जो शोषक है, हत्यारा है।

जो व्यूह रचाने वाले है
वे सुन लें, वह्नि-किरण हैं हम।
विष-ज्वाला पीने वाले हैं
अमृत हैं, पुण्य-सृजन हैं हम।

हम हस्ताक्षर गंधमयी भू के
तोड़ेंगे कलुष किनारों को।
अब कोई सौंप न पायेगा
मधुऋतु को इन अंगारों को।

डा० प्रकाश आतुर

जो आग जला दे भारत की ऊँचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई

तू पूरब का हो, या पश्चिम का वासी
तेरे दिल में हो काबा, या हो काशी
तू संसारी होवे, या हो संन्यासी
चाहे तू कुछ भी हो, पर भूल नहीं
तू सब कुछ पीछे, पहले भारतवासी

जो आग जला दे भारत की ऊँचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई

जिसकी गोदी में हम-तुम सब रहते हैं
जिसको सोने की चिड़िया भी कहते हैं
जिसके चरणों पर महासिन्धु बहते हैं
वह भूमि हमें सौ-सौ स्वर्गों से ज्यादा
उसकी खातिर हम हर मौसम सहते हैं
उसके माथे पर चिन्ता की रेखाएँ
इसलिए आज फिर व्याकुल है तरुणाई

जो आग जला दे भारत की ऊंचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई

तू महलों में हो, या हो मैदानों में
हो आसमान में, या हो तहखानों में
पर तेरा भी हिस्सा है बलिदानों में
यदि तुझमें धड़कन नहीं देश के दुख की
तो तेरी गिनती होगी हैवानों में
मत भूल कि तेरे ज्ञान-सूर्य ने ही तो
दुनियाँ के अँधियारे को राह दिखाई

जो आग जला दे भारत की ऊँचाई
वह आग न जलने देना मेरे भाई।

—रमानाथ अवस्थी

धरती तो बँट जायेगी पर नील गगन का क्या होगा
हम-तुम ऐसे बिछुड़ेंगे तो महामिलन का क्या होगा

उजली-उजली गंगा मेरी नीली-नीली यमुना है
लेकिन इन दोनों से ज्यादा सुन्दर इनका मिलना है
ऐसा कोई नहीं करें जो समता इनसे प्यार की
रात-रात भर चांद उतारा करता इनकी आरती

चाँद बनेगा महल अगर तो चन्द्रकिरण का क्या होगा
धरती तो बँट जायेगी पर नीलगगन का क्या होगा

आखिर तो हर मजबूरी का अन्त कहीं होता ही है
सुबह-सुबह से जलता सूरज शाम ढले सोता ही है
हर नीचाई ऊँची लगती है मन की गहराई से
विषधर भी जीते जाते हैं चन्दन की सच्चाई से

विष ही बढ़ता जायेगा तो फिर चन्दन का क्या होगा।
धरती तो बँट जायेगी पर नीलगगन का क्या होगा।

समय बदल देता है सब कुछ स्वयं बदलता ही नही
पर्वत नदियाँ देता है पर खुद तो गलता ही नहीं
लेन-देन होता है जिससे मुश्किल कुछ आसान हो
नाश न आए पास हमारे नया-नया निर्माण हो

महानाश ही ध्येय रहा तो नए सृजन का क्या होगा !
धरती तो बँट जायेगी पर नीलगगन का क्या हो !

—रमानाथ अवस्थी

"...............जन गण मन खतरे में है।"
चारों तरफ आग की लपटें, घर-आँगन खतरे में है।
मुस्लिम कवि रसखान कह रहा, वृन्दावन खतरे में है।
तरह-तरह के अजगर पाले, चंदन वन खतरे में है।
वंदे मातरम् बोल रहा है, जन गण मन खतरे में है।

कहीं सूर के भजन जले तो गालिब का दीवान जला।
कुछ-कुछ गजल मीर की झुलसी, कुछ-कुछ मीरागान जला।
मान जला, सम्मान जला, और भीतर का ईमान जला।
किसको हृदय चीर दिखलाये, किसका हिन्दुस्तान जला।
घायल होकर फागुन कहता, अब सावन खतरे में है।

हम क्रिकेट के पीछे पागल, या पश्चिम के फैशन पर।
प्रश्न चिह्न अब कौन लगाये, नवपीढ़ी के चिंतन पर।
हमने हिंसा जिल्द बाँध दी, मानवता की पुस्तक पर।
तिलक रक्त का लगा रहे हैं, राजनीति के मस्तक पर।
नई सदी के नये सूर्य का सिंहासन खतरे में है।

तिमिर-महाजन की ड्योढ़ी पर जब गिरवी दिनमान हुए।
खुद की भाषा, खुद की सत्ता, खुद के नये विधान हुए।
गीतांजलि के ललित भाव पर, गोली के संधान हुए।
गुरु ग्रंथ साहिब के पन्हे, फिर से लहूलुहान हुए।
अब नमाज, अरदास, सभी कुछ आराधन खतरे में है।

मान लिया नव समझौते ने नया-नया आकाश दिया।
राजनीति के नवचिंतन को, नया-नया इतिहास दिया।
मरहम रखा घाव पर सचमुच, जीने का विश्वास दिया।
झुलसे हुए पेड़ को जैसे गुछ भरा मधुमास दिया।
भाषा का जल, जल की भाषा, शब्द हिरन खतरे में है।
वंदे मातरम् बोल रहा है, जन गण मन खतरे में है।

—रमेश गुप्ता 'चातक'

जवान देश है

आज एक वज्र के समान देश है
जवान देश है अभी जवान देश है

अभी विराट शक्ति का निवास है यहाँ
अभी प्रचंड सूर्य का प्रकाश है यहाँ
अभी अनेक राग हैं, असंख्य गीत हैं
अभी तो हर तरफ नया विकास है यहाँ

आज कान तक चढ़ा कमान देश है
आज एक वज्र के समान देश है

हर तरफ मचल रही प्रबुद्ध क्रांतियाँ
दिल से दूर हो रही अनेक भ्रांतियाँ
व्यस्त है समाज महान विश्व शांतियाँ

आज एक जागता मकान देश है
आज एक वज्र के समान देश है

जोश में मनुष्य का विचित्र हाल है
वक्ष भी तना हुआ कपोल लाल है
आज सृष्टि और आज दृष्टि और है
आज एकता अनेक में विशाल है

आज विश्व में मेरा महान देश है
आज एक वज्र के समान देश है।

—रामरिख मनहर

नौका से तूफान लड़ा है, तम से लड़ी रश्मि की रेखा।
विष की ज्वाला लड़ी सुधा से, अवगुण-गुण से लड़ते देखा॥
हिंसा और अहिंसा जूझी, इसका मुझको नहीं परेखा।
फूल रहे हों एक बाग के, यह तो मैंने कभी न देखा।

अरि से अरि के यूथ भिड़े हैं, बुरे-भले को लड़ते देखा।
हानि लाभ की सतत लड़ाई, जन्म-मरण की कटती रेखा॥
सदा हिंसा ने रक्त पिया है, इसका भी कुछ नहीं परेखा।
अपनी माँ से घात करे कोई, यह तो मैंने कभी न देखा॥

रंग बिरंगे फूल खिले हों, उस डाली का भाग्य धन्य है।
जिसके शिशु सब हिलमिल रहते, उस माता सा कौन अन्य है॥
सुभग तिरंगा नभ में फहरे, जन-गन-मन सा अक्षय धन है।
विविध बोलियाँ, अंचल-भाषा, हिन्दी तो इन सबका मन है॥

गरिमामय इस वीर राष्ट्र के, जन-जन को कवि का सन्देश।
व्यक्ति बहुत छोटा है इससे, सबसे ऊँचा होता देश॥
जन्मभूमि का गौरव अक्षय, हम जीवें या मिट जावें।
हिलमिल खिलें फूल उपवन के, भेद गर्त सब पट जावें॥

आओ हम सब मिलजुलकर हो, भ्रातृभाव की सुधा पियें।
जननी जीवित रहे हमारी, हम दिन चार जियें, न जियें॥

—डा० रामकृष्ण शर्मा

सबसे पहले विश्ववंद्य इस पावन भू की जय जय हो।
सत्य-अहिंसा मानवता के आदर्शों की सदा विजय हो ॥

यह उपवन मधवा कानन से, सुरभित शुचितर धन्य बना।
विविध कलित कलिका कुसुमों का भू पर स्वर्ग अनन्य बना ॥

धन्य-धन्य है भारत जननी, तेरा गौरव अक्षय हो।
कोटि-कोटि शुचि संतानों की मातृ भूमि तेरी जय हो ॥

काश्मीर से सेतुवन्द तक, सुभग द्वारिका वंगभूमि तक।
हिमगिरि गंग-यमुन से पावन, पुण्य भूमि की सदा विजय हो ॥

तू माता हिन्दू-मुस्लिम की, सिक्ख ईसाई की जननी तू।
बौद्ध-जैन की जन्म दायिनी, नेहमयी तेरी जय हो ॥

सब तेरी सन्तान सुमन सम, यश की सुरभि सदा महके।
जन-गन-मन से गुंजित नभ में, अमर तिरंगे की जय हो ॥

मंदिर-मस्जिद-गिरिजाघर और गुरुद्वारे की सदा विजय हो।
सह अस्तित्व सदाचारों की, पावन भू की जय-जय हो ॥

कोटि कोटि संतानों की माँ, सुधा-सिंचिता की जय हो।
मंगल कारिणि, अनय संहारिणि, वीर प्रसविनी सदा विजय हो ॥

कौन आततायी जो आवे ?
किसका साहस इसे सतावे ?
राम-कृष्ण-नारक-कबीर की,
जननी को जो त्रास दिखावे ?

मोहम्मद-ईसा-महावीर की महिमा का जिसको बल है।
शंकर-बुद्ध, सुमति-रामानुज, शीश धरा जिसका अंचल है ॥

तुलसी, सूर, जायसी, कुतुवन, मंझन, मीरा की वानी।
गूंजी जिसकी गोदी में आ, निखिल सृष्टि की पटरानी ॥

इसके बेटे पंडित केशव, इसके ही बेटे रसखान।
इसी वक्ष का दुग्ध पान कर, गुरु गोविन्द सिंह हुये महान्॥
जिसने जन्म दिया गाँधी को, उसने ही जाया आजाद।
राजेन्द्र बाबू की स्मृति से, जुड़ी जाकिर की याद॥
माँ के उर में शिशुओं के प्रति, नही भाव न्यारे-न्यारे।
जितने प्यारे सुभापचन्द्र थे, भगतसिंह भी उतने प्यारे॥
याद रखे शेतानसिंह, तो क्या हमीद को भूल गये।
एक उदर से जो जनमे हैं, क्या हो सकते भेद नये ?
उसे भिन्न मानूंगा, जिसने भिन्न पिता से जीवन पाया।
उसे भिन्न मानूंगा जो जन इस माँ के नहीं गर्भ समाया॥
हिन्दू है या मुसलमान या सिख ईसाई, जैन-बौद्ध हो।
उसे भिन्न मानूंगा जिसने भारत माँ का अन्न न खाया॥
जो जन इस भू पर नहो जनमा, उसको चाहे कहो पराया।
काश्मीर से सेतुबन्द तक माँ के उर में नहीं समाया॥
जिसने हिमगिरि गंग-जमुन से, जीवन का वरदान न पाया।
वही पराया हो सकता है, इस रज से जो नहीं रचाया॥
शेप सभी तो भारतीय हैं, हम सबकी आँखों के तारे।
भाषा धर्म अलग हैं तो क्या, भारत माँ के सभी दुलारे॥
विविध कुसुम कलियों की क्यारी, उपवन तो सबका है एक।
विविध वेप औ रीति-रिवाजें, लेकिन मन तो सबका एक॥
चातक का सर्वस्व स्वाति की आशा है।
गहन सलिल ही करुण मीन की अभिलापा है॥
अलग-अलग हैं प्रान्त हिन्द में, यह वैभव का लक्षण है,
भारत सबका देश, भारती भापा है॥
नारी का सर्वस्व माँग अरु बिन्दी है।
प्रेमी-उर की निधि, प्रिया अरविन्दी है॥
लिखना चाहो महाकाव्य यदि विश्व-शान्ति का तो सुन लो।
नायक हिन्दुस्तान, नायिका हिन्दी है॥

—डा० रामकृष्ण शर्मा

एकता बनाइये और एकता बढ़ाइये
मन्दिरों के साथ-साथ मस्जिदें बनाइये।

कसम है तुमको दर्द की कसम तुम्हें कुरआन की,
कसम है इस जमीन की कसम है आसमान की,
दिलो नजर में जो भी है वो फासले मिटाइये।
एकता बनाइये.........

हरेक सिम्त बढ़ रही है नफरतों की तीरगी,
शिकिस्त इससे खा रही है चाहतों की रोशनी
जिस तरह भी हो सके यह रोशनी बचाइये
एकता बनाइये.........

जो नफरतों की आग में जला रहे हैं देश को
जो कुर्सियों के वास्ते लड़ा रहे है देश को,
तमाम ऐसे सरफिरों को अब सबक सिखाइये।
एकता बनाइये.........

वो रास्ते जो देश के पिता हमें बता गये,
वो जिस पे चल के नेहरू जी जहान को दिखा गये,
उसी पे चल के देश को महानता दिलाइये।
एकता बनाइये.........

—सैय्यद एजाज ताबिश

हिन्दू यह सोचते हैं वैकुण्ठ जायेंगे,
ईसाइयों को नाज, ईसा बचायेंगे।
मुस्लिम यह सोचते है फिरदोस पायेंगे,
मेरा ख़्याल है सबके सब सीटी बजायेंगे।

हिन्दू ही जायेगा न मुसलमान जायेगा,
जन्नत में गर गया तो इन्सान जायेगा।

कोई भी मिसाल जमाने ने पाई हो,
हिन्दू के घर में आग खुदा ने लगाई हो,
बस्ती किसी मुसलमाँ, राम ने जलाई हो,
या नानक ने राह सिखों को दिखाई हो।

राम ओ रहीम ओ नानको ईसा तो नर्म है
चमचों की देखिये तो पतीली-से गर्म है।

—सागर खयामी

ग़ज़ल

इक चिराग ऐसा मुहब्बत का जलाया जाये।
जिसका हम साये के घर में भी उजाला जाये।।

जेहन की सतह् से मिटने लगे माजी के नुकूश
आओ अब फिर से कोई नक़्श उभारा जाये।।

फिर न छाये किसी बस्ती पे धुंऐं के बादल।
फिर कोई शहरे तमन्ना न जलाया जाये।।

मौत बेताब है सीने से लगाने के लिए।
जिन्दगी से तो मेरा हाल न पूछा जाये।।

शहर में देखे हैं इस तरह् के कुछ आग के खेल।
काँप उठता हूँ जो चुल्हा भी जलाया जाये।।

जिसमें यकसाँ नजर आये सभी चेहरे 'सागर'।
आईनाखाना कोई ऐसा बनाया जाये।।

—डा० सागर आज़मी

ग़ज़ल

प्यासी जमीन थी लहू सारा पिला दिया।
मुझ पर वतन का कर्ज था मैंने चुका दिया।।

मैंने कहा था उससे जलाने को इक चिराग।
उसने इसी बहाने मेरा घर जला दिया।।

अब मेरी जिन्दगी की दुआ माँगते हैं लोग।
जब मैंने ज़िन्दगी को नजर से गिरा दिया।।

जिससे ये खौफ था कि जला देगा बस्तियाँ।
मैंने वो शोला अपने लहू से बुझा दिया।।

ग़ैरों से प्यार करने लगोगे मेरी तरह।
सोचो जो जब कभी तुम्हें अपनों ने क्या दिया।।

'सागर' खुद अपनी राह बना कर निकल चलो।
वरना यहाँ पे किसने किसे रास्ता दिया।।

—डा० सागर आजमी

जातियाँ
मनुष्यों में ही नहीं,
प्रत्येक भौतिक इकाइयों में
होती है।
जैसे आम—कलमी, दशहरी लंगड़ा।
लकड़ी—चीड़, सागवान, सीसम।
लोहा—स्पात, स्टील।
पत्थर—घीया, संगमरमर।
पर ये आपस में लड़ते नहीं !
किसी को मारते नही !!
खुद भी कहते नही !!
फिर मनुष्य ही जाति से वरवाद क्यों ?
अलीगढ़-मुरादावाद ही अपवाद क्यों ?
रुक-रुक के होते ये दुखद संवाद क्यों ?
तो लगता है कुछ वंशानुगत आदमखोर कंजर
वनजारों के नाम पर पल रहे हैं
और खुद का खून खारा है
इसलिए औरों का पीने को मचल रहे हैं
तो आओ, किसी के वहकावे में न आकर
उन आदमखोरों का पता लगायें
और उस वंश का समूल नाश कर
वतन में भाईचारा, चैन, अमन लायें।

—श्याम ज्वालामुखी

ये मेरा हिन्दुस्तान है ये तेरा हिन्दुस्तान है
मन से तो ये राम-कृष्ण है तन,से मगर किसान है
सबसे पहले यहीं प्रेम ने
अपनी आंखे खोली थी
सबसे पहले यहीं वेद की
सरस ऋचायें बोली थी
सूर कबीरा तुलसी मीरा का ये गौरव गान है
मन से तो ये राम-कृष्ण है तन से मगर किसान
यही नारियों ने जल-जलकर
ज्वाला का शृंगार किया
यहीं खेलने के ईश्वर ने
बार-बार अवतार लिया
महावीर का तप तीरथ ये गौतम बुद्ध का ज्ञान है
मन से तो ये राम-कृष्ण है तन से मगर किसान है
अमृत जिसको देख लजाये
इसमें वो गंगा जल है
जिसके रंग में श्याम रंग गये
ऐसी यमुना श्यामल है
मेरे देश से बढ़कर जग में, कौन सा देश महान है
मन से तो ये रामकृष्ण है तन से मगर किसान है
तिलक बना करके इसकी
मिट्टी को सर पर धारो तुम
वक्त पड़े तो इसकी खातिर
अपना शीष उतारो तुम
मिट जाये जो देश की खातिर वो ही व्यक्ति महान है
मन से तो ये राम-कृष्ण है तन से मगर किसान है।

—कुमारी स्वर्ण भारती

मुक्तक

अब न मस्जिद न अब हम शिवाले लिखें।
गीत में रंग गोरे न काले लिखें।।
अब समय है कि मेघों के सीने पे हम
बिजलियों की कलम से उजाले लिखें।।

फूल तो है कई पर चमन एक है।
है सितारे कई पर गगन एक है।।
लाश सिख-हिन्दू-मुस्लिम किसी की भी हो
हमने देखा सभी का क़फ़न एक है।।

कौन अल्लाह है, कौन भगवान है।
प्रश्न को मिल न पाया समाधान है।।
जिसके दिल में वतन की मुहब्बत न हो
वो न हिन्दू, न सिख, न मुसलमान है।।

ग़र मुहब्बत को नफ़रत में बदलोगे तुम।
ग़र अमन को यूँ गफलत में बदलोगे तुम।।
सबका विश्वास ईश्वर से उठ जायेगा
धर्म को ग़र सियासत में बदलोगे तुम।।

जिस्म को छोड़कर जन को पूज लो।
मान को छोड़ अरमान को पूज लो।।
सिख - हिन्दू - मुसलमान को छोड़कर
दोस्तो, आज इन्सान को पूज लो।।

कौम को अब कबीलों में मत बाँटिये।
यह सफ़र चन्द मीलों में मत बाँटिये।।
इक नदी की तरह है हमारा वतन
इसको तालों औ झीलों में मत बाँटिये।।

बिम्ब बहती नदी का न धुंधला करो।
खून से नीर इसका न गँदला करो ॥
मान भी जाओ पानी के सौदागरो।
इस नदी को न अब और उथला करो ॥

भोग का पक्षधर संयमी बन गया।
हर अकर्मण्य भी परिश्रमी बन गया ॥
इस नदी के सलिल में वो तासीर है।
जिसने भी पी लिया आदमी बन गया ॥

इस नदी में नहाकर जो इठलाओगे।
बस थपेड़े ही लहरों के तुम पाओगे ॥
रोक लो अब भी नफरत की बारिश को तुम
यह जो उफना गई तो कहाँ जाओगे ॥

मेघ की मेहरबानी नहीं चाहिए।
टुकड़ा-टुकड़ा रवानी नही चाहिए ॥
रेत-दर-रेत ही जिसकी उपलब्धि हो।
इस नदी को वो पानी नही चाहिए ॥

—डा० उर्मिलेश

जो हमारे पास है, सब कुछ वतन के वास्ते।
क्या अर्जा, अरदास, व्रत, पूजन वतन के वास्ते।।

ऐ वतन! ये महल, मीनारें तेरी जागीर हैं।
मन्दिर-ओ-मस्जिद, गुरुद्वारे तेरी जागीर हैं।।

खेत में हँसती फसल का, धन वतन के वास्ते।
कारखानों का ये उत्पादन, वतन के वास्ते।।

हर खुशी तेरी, तेरे सम्मान को तैयार हैं।
आज हम हर त्याग, हर वलिदान को तैयार हैं।

हर दुल्हन के हाथ का, कंगन वतन के वास्ते।
और मंगल-सूत्र का, कंचन वतन के वास्ते।।

जन्मभूमि के लिए तो मौत भी मंजूर है।
प्राण देने को विकल हर माँग का सिन्दूर है।।

खून की तो बात क्या, तन, मन वतन के वास्ते।
सिर कटाने का वचन, पावन वतन के वास्ते।।

—वेद प्रकाश शर्मा 'सुमन'

एक लम्हा खून से तर, देर तक ठहरा रहा
काले धुएँ का दूर तक, आकाश में पहरा रहा

आदमीयत सर पटककर, रात भर रोती रहीं
वारदातें हर शहर, दर-बदर होती रहीं

चन्द अफवाहें उड़ी, महौल में फैली रही
माँ बहिन जलते घरों में, रात भर सहमी रहीं

देश क्रोधित मन दुखी, काला दिन वो हो गया
रोटी मँहगी हो गई, खून सस्ता हो गया

एक हस्ती मुल्क में थी, जर्रे-जर्रे बस गई
बेसुरे जो साज थे हर तार उनका कस गई

आज सदियों से भी भारी हमको ये लम्हा लगा
भीड़ वाले देश में, हर आदमी तन्हा लगा।

—विट्ठलभाई पटेल

सब मिलकर उठायें कुदाल—
देश खुशहाल करें।
खेत और खलियानों को हम जगायें।
सोने और चाँदी की फसलें उगाये॥
करें भारत का उन्नत भाल—
देश खुशहाल करें॥
कल-कल करती कलों को चलायें।
बन्द मिलों में उत्पादन बढ़ायें।
तोड़ें हड़तालों का सब बवाल।
देश खुशहाल करें॥
धनियाँ की झोपड़ी गाये प्रभाती।
चौपालें ढोला के गीत गुनगुनाती॥
बाजे ढोलक पे खुशियों की ताल—
देश खुशहाल करें॥

—वीरेन्द्र तरुण

गाता है गंगा का नीर
गूँज रहा जमना का तीर
अपनी धरती स्वर्ग समान
ये है अपना हिन्दुस्तान

हिन्द ने पायी आजादी
खून से आयी आजादी
सव है दान शहीदों का
है एहसान शहीदों का
भारत के वो सच्चे लाल
जिनसे उठा था एक सवाल
कव ये गुलामी छूटेगी
किस दिन वेड़ी टूटेगी
अन्त में हँसकर दे दी जान
हमको मिला तव हिन्दुस्तान
मिट न सकेंगे उनके नाम
उनको सौ-सौ वार प्रणाम
देश पे हो जो कुर्वान
ये है अपना हिन्दुस्तान

देश ये रंग-विरंगा है
सवका एक तिरंगा है
अपनी-अपनी वोली है
फिर भी एक ही टोली है
धर्म जुदा है जात जुदा
पर नहीं हाथ से हाथ जुदा
प्यार का रास्ता नेक यहाँ
मन्दिर-मस्जिद एक यहाँ

जितना गिरजा है प्यारा
उतना प्यारा गुरुद्वारा
वात सभी की सच्ची है
जात सभी की अच्छी है
हर मजहव का है सम्मान
ये है अपना हिन्दुस्तान

कैसे-कैसे फूल खिले
कैसे-कैसे दीप जले
तुलसी-सूर के छन्द अमर
मीरा के हैं वन्द अमर
जन्मे गालिव-मीर यहाँ
नानक और कवीर यहाँ
लिखते थे रसखान यहीं
वैजू की थी तान यहीं
गौतम ने संदेश दिया
गीता ने उपदेश दिया
इसने जग को दीक्षा दी
कैसी-कैसी शिक्षा दी
सदा रहेगी इसकी शान
ये है अपना हिन्दुस्तान

ये है वतन शिवाजी का
शास्त्री, नेहरू, गाँधी का
ये है शहीदों का गुलशन
तिलक-पटेल का है उपवन
धरती ये टैगोर की है
राणा और राठौड़ की है
घर ये भगत-सुभाष का है
वीरों के इतिहास का है
यहीं तो राजा राम हुये

चंगीपर घनश्याम हुए
पहरेदार हिमाला है
और सागर रखवाला है
इसका रूप है गतिमान
ये है अपना हिन्दुस्तान।

ऋतुएँ करती हैं शृंगार
धूप के आता हर त्योहार
बीन तो बजती बीन यहाँ
गीत-गगन रंगीन यहाँ
बैसाखी की धूम मचे
होली में ना रंग बचे
ईद मने गुलशनों में
दीवाली उजियारों में
भोर सुनहरी बागतो
शरद की पूनम रसवंती
कोयल कूके अमरैया
छम-छम नाचे पुरवैया
नाचे गेहूँ झूमे धान
ये है अपना हिन्दुस्तान

अमन हमारा नारा है
सबसे भाईचारा है
पर कोई आँच उठाता जब
सरहद लांघ के आता जब
तब न किसी से डरते हम
देश की खातिर मरते हम
पूछो हल्दीघाटी से
या झांसी की माटी से
हम हैं गांधीवादी भी
लेकिन रण के आदी भी
हम क्या जानें क्या है हार

जीत के फेंकें हम तलवार
यही हमारी है पहचान
ये है अपना हिन्दुस्तान ।

गाता है गंगा का नीर
गूंज रहा जमना का तीर
अपनी धरती स्वर्ग समान
ये है अपना हिन्दुस्तान ।

—वीनू महेन्द्र

वही धरा है, मुक्त हवा है और गगन भी नीला है,
किन्तु अश्रु आँखों में भारत माँ का आँचल गीला है।
पाल-पोसकर वड़ा किया था आजादी के आँगन में,
इस हद तक गिर जायेगा, कब सोचा था यह सपनों में।
उजियाले जो हैं घर के वो अँधियारे फैलाते हैं,
अपने ही गुलशन की आज हवा से हम भय खाते हैं,
आज कैक्टस फूल रहे और कमल खड़ा अनबोला है।
किन्तु अश्रु आँखों में भारत माँ का आँचल गीला है ॥
शस्त्रों का अम्बार जहाँ हो प्रभु का द्वारा नहीं होता,
भेद-भाव का पाठ सिखाने वाला गुरु नहीं होता।
सोने की प्राचीरों में क़ैदी भगवान नहीं होता,
स्नेह सुमन पारागण कण-कण में गोविन्द रमा करता
आज मंदिरों ने सैनिक अड्डों के बल को तौला है।
किन्तु अश्रु आँखों में भारत माँ का आँचल गीला है ॥
आज देवकी के अबोध पुत्रों को कुचला जाता है,
नत मस्तक है अर्जुन फिर भी वो ललकारा जाता है।
रोज किसी पांचाली को निर्वसन बनाया जाता है,
इसी तरह आजादी का त्योहार मनाया जाता है।
प्रजातन्त्र के ताण्डव से सत्तासन डग-मग डोला है।
किन्तु अश्रु आँखों मे भारत माँ का आँचल गीला है ॥
आग साम्प्रदायिकता की, यह अब तक भी नही बुझी
भारत माँ के बटवारे की बात तुम्हे कैसे सूझी ?
भूल रहे तुम भारत की गरिमा उसके इतिहासों को,
भूल रहे हो अमर शहीदों को उनके उच्छ्वासों को।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, इस माटी खेला है।
किन्तु अश्रु आँखों में भारत माँ का आँचल गीला है ॥

—वीणा अग्रवाल नीलम

राखो-राखो रे तिरंगा को मान
गाँधी को सपनूं पूरण करां,
ईको अग-जग में सम्मान्
गाँधी को सपनूं पूरण करां ।

आजादी के खातिर होली
तिरंगा नै खेली
गोरां की सामी बन्दूंकां
तिरंगा नै झेली,
यो तो जन-जन को आह्वान,
गाँधी को सपनूं पूरण करां ।।

प्रजातंत्र भारत की रक्षा
लिया हाथ में गाँधी,
इन्दिराजी का जावा सूं
या क्यूं कर चाली आंधी
होगी जग-जननी कुर्बान
गाँधी को सपनूं पूरण करां ।।

भ्रष्ट प्रशासन मेट रह्यारे
देखो राजीव गाँधी
धरती पे कुर्बानी दे दी
बापू-इन्दिरा गाँधी
ई वो मोल करो रे इन्सान
गाँधी को सपनूं पूरण करां ।।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई
ई धरती का जाया
मानवता को धर्म भूलकर

नाल ! पंथ चलाया
इसा, गौतम, बुद्ध महान
गाँधी को सपनूं पूरण कराँ ।।

हरिजन-गिरिजन, साधु-संत जन
सेवा में जुट जावाँ
निर्बल-दीन अनाथ देश का
वाँका दुख मिटावाँ
म्हाँ को भारत देस महान
गाँधी को सपनूं पूरण कराँ

कांग्रेस ई असी पार्टी
जड़ाँ जमी छै गहरी
गंगा माँ सो रूप वण्यों छ,
निर्मल धारा वहरी।
भारत का सुख की खान्
गाँधी को सपनूं पूरण कराँ ।।

—धन्ना लाल सुमन

ना कोई हिन्दू ना कोई मुस्लिम, ना कोई सिक्ख ईसाई रे।
मनख ज्यात थाँ मनख वणों भई, ईंसा वण कें जोल्यों रे॥
प्रेम को प्याली पील्यो रे।

अंग एक सा रूप एक सो, एक जसी या काया रे।
खून एक और मांस एक, हाड अलग न्हं लाया रे॥
ईश्वर अल्लाह प्रभु यशु की, देखी एक सी माया रे।
क्यूं जमात न्याली-न्याली छः ईको ज्ञान लगा ल्यो रे॥
मनख ज्यात छो—...

रामायण ने कद कह दी छीः आपस में था लडज्यो,
कुरान म्हं भी कहां लिखरी छ: आपस में था कटज्यो।
बाइबिल गुरु ग्रन्थ दिखावे, प्रेम को प्यारो रस्तो।
आपस में क्यूं लडो रे भाई, धर्म आड में ले ल्यो रे।
मनख ज्यात छो...

मनख्यां खातिर छुरि कटारयां, अणु बम्ब बणवादया,
खून का प्यासा होग्या रे थाने सारा धरम लजादया।
राम मुहम्मद गुरु नानक, ईसा करणी भूल्या,
दुनिया भर संतान छ: ओम की, ओम को सुमरण कल्यो रे।
मनख ज्यात छो...

—जगदीश निराला

आ जमीन आपँणी, आपाँ जमीन का धँणी
खोस न लेवे कोई, सुई वरावरी अणी

जे देस पर चढ़े कोई तो चीरदयो वठँ
जे हेम पर वढ़े कोई कोई तो फेकदयो वठँ
जे आँख झाँकले तो थे फोडदयो वठँ
जे पग्न नाँख दे तो थे तोड़दयो वठँ
थे सिंघ रा सपूत थारी मात सिंघणी
आ जमीन आपँणी आपाँ जमीन रा धणी

जे पाक धाक दे तो थे साँभलो उठो
कसमीर पर चढ़े कोई समसीर ले उठो
इक धर्म की वो वात कँसे धर्म थे उठो
जे वंम की वो वात कँ हद वंम कँ उठो
जम ही न ले सकँलो नाग जीवताँ मणी
आ जमीन आपँणी आपाँ जमीन रा धँणी

जाग सिख जाग वोल सतश्री अकाल रे
जाग जाट जाग जाग मोरचा सँभाल रे
जाग तू मुसलमाँ कर दिया कमाल रे
जाग राजपूत जाग दुष्ट नँ दकाल रे
मोत हेत खेल सीख सीस वीजणी
आ जमीन आपँणी आपाँ जमीन रा धणी

—कल्याण सिंह राजावत

इण धरतीरा लाडेंसर हाँ,
नाँव है म्हारो भारती,
मीठा गीत मिलणरा गावाँ,
जगत उतारै आरती।

समता रा सिर मोर जगत में,
जन तन्तर रा हामी हाँ,
मिजमानी मिनखा चारे री,
आखै जग में नामी हाँ,
धन-धन म्हारे संस्कार नैं
सगला धरम सरीसा है। म्है धरती रा लाडे सर हाँ।

रण वंका नर-नार सती
निज धरा धरम नै धारणियाँ,
निछरावल करदे प्राणारी,
जीवन-धन ने वारणियाँ,
समय परस सी आँ वचना नै,
साँची कोर जरीसा है। म्है ममता रा लाडैं सर हां।

मनरा मोम वोल में मीठा,
मोल करयाँ लाखीणा है,
फणधर थाल गलै में घूमै,
ए-शारदी री वीणा है,
सोरम च्यारूँ मेर फेलसी
कँवला कमल सरीसा है।
म्है धरती रा लाडेंसर हाँ,
इण धरती रा लाडेंसर हाँ। नांव है म्हारो भारती,
मीठा गीत मिलणरा गावाँ। जगत उतारैं आरती।

—मोहम्मद सदीक

मायड़ धरती मरुधरा आ वीराँ री रवणाँ
नगकण हीरा नीप जे इण धरती रे पाँण

सूरज उगती सीस नवावै
इणने देव निरख मुल कावै
इणरी गाथा कण कण गावै
वसुधा वीराँ री·········धरती धोराँ री·········

सूरमा कटकै रटक मचावै
वावन भैरू चक्कर चलावै
खप्पर जागणियाँ भरजावै
हँसता हीराँ री·········वसुधा वीराँ री·········

राणे रण खाँडा पलकाया
भाला दुरगदास भॅलकाया
खाला जूझाँराँ खलकाया
तीख तीराँ रो ······· वसुधा वीराँ री·········

आगरौ अमरसिंह धूजायौ
तेजा धरधर नागपूजायौ
जौहर पदमण कर दिखलायौ
माटी मीराँ री·········वसुधा वीराँ री·········

पोथी कवियाँ जद जद वाचो
रजवह नड़ी नड़ में नाची
आतो लोही रे रंग राची
धिन धिन धोराँ री······वसुधा वीराँ री······

—रेवत दान चारण

म्हारी धरती री कुण करै होड़ आ माटी है अँगारां री
वीरां रण वंका जोधां री आ जणणी है जूं झारां री.........
वांणी रजथांनी सूरांणी कवि कंठा पोथ्यां कथियोड़ी
धोरां, मगरां अर डूंगरियां पग पग पूतलियां रूपियोड़ी
ख्यातां इतिहासां में इणंरी अर्ण जांणी वातां लिखियोड़ी
राती रतनाली लोही सूं कण कण में गाथा मंडियोड़ी
भालां अर तीरां दालांरी आ रण भूमि तल वारां री
म्हारी धरती री कुण करै होड़........ ....
मां भारत री आजादी रा कण कण में उग्या वीज अठै
फूली अर पसरी अमर वेज तिलतिल सींची ज्यो रगत अठै
चंडी गल गूंथण रूंडमाला अणगिण सूंपीज्य सीस अठै
वांकी धरती आ वाइज है रजरज में जूंझया वीर जठै
को रयोड़ी रहगी चितरांमां अणदी ठी छिव उणियारां री...
म्हारी धरती री कुण करै होड़..........................
अंगारा वुझग्या भोभर में क्यूं माटी ठंडी पड़गी है
वेमाता की कर वीसरगी मिनखा तन काचाधड़गी है
सीच्योड़ी तन रे लोही सूं वे साखां आज उजड़गी है
थो थी थालियां में थाकी है आ वालद क्यूं विणजारांरी
म्हारी धरती री कुण करै होड़.........................
मोट्यार मरण मनवारां करसी जद काटक राट कमा चैला
सँम्योड़ा मिलसी कुरूखेतर कल जुगरा किरसण साचेला
वाजेला जिणपुल रण मेरी तिरलोकी तांडव ना चैला
गीता जद पिरथी परलै री धरती रो कण कण वा चैला
त्रवाल नगारा सिंह नाद आ हेवा हू हुंकारा री............
आ माटी है अंगारी......................................
वीरां रण वंका जोधां री
आ जणणी है जूंझांरां री...................................

—रेवत दान चारण

माटी सौं करि लै प्यार।
नर जनम न मिलैं हजार।

याकी गोद जनम तैंने पायो।
बचपन धूरि मे लोट वितायो।
भूख लगी तो खाय लई माटी।
निंदिया लगी बिछाय लई माटी।
तू माटी कौ बिरवा प्यारे, जा पै चढी बहार
माटी सौं करि लै प्यार।

खेतन की माटी है सौनौ।
बिटिया की शादी अरू गौनौ।
जब माटी में बीज परत है।
हलधर के सपने उपजत है।
ई माटी अँखियन कौ कजरा और गरै कौ हार।
माटी सौ..................

दुनियाँ पै माटी कौ करजा।
माटी कौ ईसुर सौ दरजा।
माटी कैसर की सी क्यारी।
माटी है सबकी महतारी।
बाबुल की गोदी सौ बढिकैं माटी दैय दुलार।
माटी सौ..................

हम सब है माटी के छौना।
माटी माथे दिये डिठौना।
आपस में मत खेंचौ पारौ।
माटी कौ कैसौ बँटपारौ।
मेरे प्यारे भैया मानौ माटी की मनुहार।
माटी सौ..................

माटी नें बहुरूप बनाये।
देहरी आँगन दार सजाये।
महल झोंपड़ी सब माटी के।
हम तुम सब पुतरे माटी के।
अंत समय माटी सों मिलिये माटी करे सिंगार।
माटी सों.....................

—चरण चतुर्वेदी

वैंया तो जिन्दगानी को ही नाम जीणूं है
पणा जो मरकर अमर रव्है, जीणूं वो, जीणूं है

(1)

कीट, पतगा, पसु, पंछी से जिन्दगी पावै
पणवाँकी जिन्दगानी खाली पेट भरण पावै
कुत्ता, कुत्ता है, कुत्ताँ की मौत मरजावै
पण वाँकी कोई व्हाणी, इतिहास नहीं गावै
जो समाज, देश के लिए ही जाणै जीणूं है
मरकर भी अमर रव्है, वाँको ही जीणूं है

(2)

आजादी के लियै लड़या कितणाँ-कितणाँ साथी
तिलक, गोखले, मोतीलाल, जवाहर अर गाँधी
बीच - बीच में कितरी - कितरी आई आँधी
पाग जवाहर बाँधी जो, वा-इन्दिराजी काँधी
वा आणै थी फाट्योड़े गावाँ नें सीणू है
ऐंयाँ को ममता-माँ को ही जीणूं, जीणूं है

(3)

जेंकी थी कामना, दब्योड़ो वर्ग उठाणूं है
सोसण, अत्याचार व भ्रस्टाचार मिटाणूं है।
मिटा गरीबी, भारत ने भी आगें ल्याणूं है
सब देसाँ सें भाईचारो धणूं बढाणूं है
रात र दिन आ ही चिन्त्या सैं गात खीणूं है
जो पळ-पळ ही जिये देश हित, वींको जीणूं है

(4)

जठे जठे वा पूंचो, बणगो, जाणों-पैचांणो
के-के कष्ट सह्या वा ही जाणं थी इवताणी
रक्षक ही भक्षक बण कर कं, खतम करी व्हाणी
पणवा व्हाणी अमर हो गई या जग की बाणी
देह मरं, आतमा मरं नी, लक्ष्य लखोणूं है
बूंद-बूंद रगत की देस नं, वी को जीणूं है

(5)

घोर विपत्ती कं छिण में जो वाग संमाळे है
सिर पं विपदा लेरं देश की विपदा टाळे है
भांत-भांत का ज्हेर पीर जोइमरत ढ़ाळे है
जठे-जठं भी बाड़ खा रही, खेत रूखाळे है
पुरसारथ सं जां को साहसा कदे न हीणूं है
ये ही नेता अमर रव्है, आं को ही जीणूं हैं

—विमलेश राजस्थानी

ल्यो, उठो नैं, रावण मारां ।
बंजर बालू का हाथां में, अन-धन का धनुष-बाण धारां ।

जिद राजा जनक किसाण बण र, जोती जमीन खुद हल चला र
तो पड्यो निपजणू लिछमी नैं, सीता-सो सुन्दर रूप धार ।
शो संकर-सी नागी-भूखी जनता का दुख को धनुस तोड़,
वरमाला पैसी राम लहैरउठ्या सुख का सागर अपार ।
क्यूं परसराम को भरम मेटवा मैं म्हे ही हिम्मत हारां ?
ल्यो, उठो नैं, रावण मारां ।

सोना की लंका राक्सां का आलकसां सैं भरदी छै,
निरधनता नकटी सूपनखा, अर मैंगाई मंदोदरी छै ।
आसा पाला का डाला पर शिक्षा की सिया हींद री छै,
रूजगार-राम का दरसण बिन बिलखैं बी. ए. की डिगरी छै,
नो वैकेन्सी-तिरजटा बणी, ऊबी छै ताण्यां तलवारां ।
ल्यो, ऊठो नैं, रावण मारां ।

सूंखा मैं सत्ता कुम्भकर, बाढां मैं गरजै मेघनाद,
दोन्यू ही ठोर किसाणां का लुटगामैनत अरबीज खाद ।
खा लात विकास-बिभीसण सो सरणै आ पड्यो समाजवाद
वो भगत निकल जासी र बात इतिहास राखसी सदा याद ।
दे सरणागत नैं अभैदान, कालजै चपेक र पुचकारां ।
ल्यो, ऊठो नैं, रावण मारां ।

सब इंजिनियर, नल-नील बण, र लिख काम-काम भाटै-भाटै
धनवान-गरीबां बीच बिसम अन्तर का महा सिन्धु पाटै ।
उद्योगी अंगद जगां-जगां पग रोप मिलां र फक्ट्र्यां का,
हनुमान मिल्या फल को बोनस, सब श्रमिक बांदरां में बांटै ।
अबखैं कैंवार-सो असन्तोख, भर जावै मेल-मेल यारां ।
ल्यो, ऊठो नैं, रावण मारां ।

रम करम सम्परदायाँ, भासा-भूसा, जाताँ, पाँताँ,
ही देह का दस मूंडा, वोलें न्यारी-न्यारी वाताँ।
वाली अर सुगरीव वण र, क्यूँ आपस में लड-लड र मराँ,
छा विचार की वाड लगा, क्यूँ अटकाँ अगाने आताँ ?
कारी वण सव सगलाँ का खेताँ की सीमा विस्ताराँ।
ल्यो, ऊठो नें, रावण माराँ।

द वैर-भाव का रावण मर, जण-जण में जागे प्यार-प्रीति,
अगनी में परखी-निरखी सीता-सी जग की राजनीत।
ार अयोध्या सुखी हो र घर-घर में घी का दीप जुपे,
र्वोदय ओर समाजवाद की प्रजातन्त्र की पडे रीत।
राम-राज की सोभा पर सव तनमन,धन, जीवन वाराँ।
ल्यो, उठो नें, रावण माराँ।

—वुद्धिप्रकाश पारीक

गीत

नुअें डगर में फूलाँ वदलें,
अें कुण वोवें आज ववूल ?
झाड वांठका केर ककंडा,
खेर खेजडा मेला नेडा
धरती माता सूं वतलावें
रोहीडा घर अलग वणावें
भायाँ मैं ही फूट पडें जद
हिवडें म्हारें उपडें सूल
नुअें डगर में.........

वाँझड खेडा खड्या खेंजडा
पूंन पालकी डाल जेंवडा
मींझर मुलक हिंडोला झूलूं
रोहीडा मन ही मन फूलें
कँवर केलिया वोल्या ताऊ
काकाँ वावाँ नें मत भूल
नुअें डगर में............

खेडलाँ नें करसा जाणूं
रोहीडा धनवान वखाणूं
रूप रंगीला धणाँ डावडा
काला पडसी तपे तावडा
झडज्यासी अ पाकल फूल
उडसी जद धोराँ री धूल
नुंअें डगर मैं फूलाँ वदलें
अें कुण बोवें आज ववूल।

—गजानन वर्मा

गीत

सुण दिखणादी वादली उतरादे छेडे जा
पीव जठे रण मैं जूझे तू वाँने हंस वतला ए।
कहजे म्हारे छेल भँवर नै नणदल रे उणिहार है
मायड आँगण हरख मनावे राम रसोई नार है
भाँण आरतै री थाली लै ऊभी आज दुआर है
भुआ पालणे पूत पढ़ावे जीण भरण नें त्यार है
सुण दिखणदी वादली उतरादे छेडे जा
वरेस मताँ जे वरसे वैरी पर ओला वरसा ए
सुण दिखणदी वादली····················

मायड रो संदेसो कहजे दूधाँ दाग लगाई ना
कहजें म्हारे हिंगलू—वरणें चुडले नें विसराई ना
भाँणाँ की राखी को रेसम तार-तार विखराई ना
भूआ की भोलावण कहजे रण मैं पीठ दिखाई ना
सुण दिखणादी वादली उतरादे छेडे जा
गरज मताँ जें गरजें तो वेरी पर गाज गिरा ए
सुण दिखणादी वादली····················

लश्करियो जे रण मैं जूझे वेसक मतना वतलाई
घर को भेद पेट मैं राखो जगाँ जगाँ मत रलकाई
जाँ रण-खेताँ दोहो वरसे वाँ पर जल मत वरसाई
प्राँण वीजताँ वीर उगे तौ उमड-घुमड सौ वल खाई
सुण दिखणादी वादली उतरादे छेडे जा
हरख मताँ जें हरखे तो सुसरे को वंस वधा ए
सुण दिखणादी वादली····················

—गजानन वर्मा

मरदां बाग लगावां रे,
बाड़ झाड़ नै काट आज
गुल मोहर उगावां रे ।। मरदां............
ई धरती ने चमन बणाद्यां,
या छै म्हांकी माता,
जनम-जनम सूं जुड़ता आया
ई धरती सूं नाता
ई सूं प्रीति लगावां रे
बाड़ झाड़ नै काट आज
गुल मोहर लगावां रे ।। मरदां............
मरवो और मोगरो महके,
छा जावे हरियाली
गांव-गांव घर-घर में आवे
फेर नई खुशहाली
मन को मैल मिटावां रे
बाड़ झाड़ नै काट आज
गुल मोहर उगावां रे।। मरदां............
मनखपणा की खेती करस्यां,
नयो करां निर्माण
जननी-जन्मभूमि के खातिर
अर्पण करद्यां प्राण
सबने चाल जगावां रे
बाड़ झाड़ नै काट आज
गुल मोहर उगावां रे।। मरदां............

—धन्ना लाल सुमन

□□

प्रभा ठाकुर

जन्म : 10 सितम्बर, 1951 कोटा (राज०)

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी) उदयपुर विश्वविद्यालय

हिन्दी की शीर्षस्थ पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन, रेडियो, दूरदर्शन द्वारा समय-समय पर कविताओं का प्रसारण एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों में प्राप्त देशव्यापी ख्याति एवं लोकप्रियता

1983 मे प्रतिष्ठित संस्था 'भारतीय विद्या भवन' द्वारा अमेरिका तथा कनाडा में आयोजित हिन्दी काव्य गोष्ठियों मे आमंत्रित तथा बाल्टेमूर नगर मे मेयर द्वारा वहां की मानद नागरिकता से सम्मानित

प्रकाशित कृति—बौराया मन (कविता-संग्रह)

पता : 33 एवी गंगापथ, सूरजनगर (प.)
सिविल लाइंस, जयपुर